

रोहतक भूमि

रोहतक, रविवार, 2 नवंबर 2025

तापमान



अधिकतम 31.5 डिग्री
न्यूनतम 15.6 डिग्री

11 लड़कियों की
टैड में मानसी
रहीं प्रथम,
लंबी कूद ...



12 इंडस पब्लिक
स्कूल में हुई
दसवें वार्षिक
एमयूएन ...



खबर संक्षेप

युवक को अवैध हथियार सहित किया गिरफ्तार

रोहतक। जिला पुलिस की सीआईए-2 स्टाफ की टीम ने दौरान गश्त युवक को अवैध हथियार सहित गिरफ्तार किया। आरोपी के खिलाफ शस्त्र अधिनियम के तहत केस दर्ज किया गया है। सीआईए-2 प्रभारी उप निरीक्षक सतीश कुमार ने बताया कि मुख्य सिपाही जोगिन्द्र के नेतृत्व में सीआईए-2 स्टाफ की टीम बलियाणा पुल के पास गश्त में मौजूद थी। गश्त के दौरान बलियाणा पुल के नीचे से युवक को शक के आधार पर काबू किया गया। युवक की पहचान संदीप उर्फ सैदी निवासी चूलियाणा के रूप में हुई। तलाशी लेने पर युवक के पास से एक देशी पिस्तौल, एक देशी कट्टा व तीन रॉड बरामद हुआ है। आरोपी के खिलाफ शस्त्र अधिनियम के तहत थाना आईएमटी में केस दर्ज कर कार्रवाई की गई। उसका पुराना आपराधिक रिकार्ड रहा है। आरोपी के खिलाफ एक मामला बहादुरगढ़, जिला झज्जर में दर्ज है।

राज्य स्तरीय खेल स्पर्धा का ट्रायल आज से

रोहतक। राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिता 2025-26 के लिए तैयारियां शुरू हो गई हैं। प्रतियोगिता 11 नवंबर से 13 नवंबर तक आयोजित की जाएगी। इस दौरान अंबाला में तैराकी, बैडमिंटन, हैंडबॉल और वॉलीबॉल की स्पर्धाएं होंगी, जबकि चंक्रुला में एथलेटिक्स और बास्केटबॉल के मुकाबले खेले जाएंगे। इन खेलों के लिए जिला स्तरीय ट्रायल 2 और 3 नवंबर को आयोजित किए जाएंगे, ताकि उत्कृष्ट खिलाड़ियों का चयन राज्य स्तर के लिए किया जा सके।

हरियाणा दिवस पर लगाया रक्तदान शिविर

रोहतक। हरियाणा दिवस के पानव अवसर पर भारत विकास परिषद, सेक्टर शाखा द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 46 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। शिविर में लड़कियों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लेते हुए समाज सेवा की प्रेरणादायी मिसाल प्रस्तुत की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पीजीआईएमएस के निदेशक डॉ सुरेश कुमार सिंघल ने शिरकत की। उन्होंने परिषद के इस मानवसेवी कार्य की सराहना करते हुए कहा रक्तदान मानवता की सबसे बड़ी सेवा है। यह कार्य न केवल जीवन बचाने का माध्यम है, बल्कि समाज में सहयोग और संवेदना की भावना को भी सुदृढ़ करता है।



रक्तदान शिविर में 35 यूनिट रक्त एकत्र

रोहतक। देश भक्ति स्मारक स्थल अंबेडकर चौक पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। राष्ट्र देवो भव: मिशन के संस्थापक संत बाबा सूखा शाह ने बताया कि आज का रक्तदान शिविर फौजी भाईचारा संस्था के प्रेसिडेंट राजेश अहलावत ने अपनी पत्नी स्वर्गीय मुकेश कुमार अहलावत की पांचवी पुण्यतिथि पर उनकी याद में लगवाया। एम्स बाडसा, झज्जर के सौजन्य से 35 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। सभी रक्तदाताओं को प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया गया।

पंजाब विवि ने अमरजीत सिंह को किया सम्मानित

रोहतक। पंजाब विश्वविद्यालय की वाइस चांसलर रेनु बिज ने हरियाणा के सूचना आ्युक्त अमरजीत सिंह (सेवानिवृत्त एचसीएस) को छठी रत्नोत्सव एलुमिनाईड मीट में सम्मान से सम्मानित किया है। कार्यालय में म्यूथ तौर पर जस्टिस उच्चतम न्यायालय स्वतंत्र कुमार, चंडीगढ़ पुलिस के डीजीपी, भूगोल विभाग की चेयरपर्सन नवनीत कौर रही है।

अच्छी पहल : पुलिस की कार्यप्रणाली में सुधार और व्यवहार के सुझाव भी दे सकेंगे

जिले के हर थाना चौकी में लगाया गया फीडबैक क्यू आर कोड



एसपी कार्यालय में प्राप्त होगी रिपोर्ट, वेरिफिकेशन के लिए शिकायतकर्ता को किया जाएगा कॉल

हरिभूमि न्यूज | रोहतक

रोहतक पुलिस ने पहली बार फीडबैक के लिए बड़ी पहल की है। अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करते हुए पुलिस फीडबैक क्यू आर कोड जारी किया गया है। इससे पता चलेगा कि अधिकारी किस स्तर तक आमजन की सुनवाई के लिए कार्य करते हैं। सभी थानों व चौकियों में स्कैनर लगाया गया है। कोड को मोबाइल से स्कैन करने पर शिकायत कर्ता/आमजन को 12 विकल्प मिलेंगे। जिसमें 11 विकल्पों में से प्रत्येक में से 1 विकल्प को चुनना होगा। स्कैनर जारी करने का मुख्य उद्देश्य है कि पीड़ित द्वारा थानों में जाने पर उसके साथ थाने का व्यवहार, कार्यप्रणाली, थाने का वातावरण, शिकायत पारदर्शी, अपारदर्शी आदि के बारे में जानना। इस कोड में आखिरी बारहवां विकल्प थाने के प्रति कोई विशिष्ट प्रतिक्रिया या अन्य कोई सुझाव देना चाहते हैं तो उस पर अपना विचार साझा कर सकते हैं।

अब क्यू आर कोड स्कैन कर दे सकेंगे पुलिस की शिकायत

कोड को मोबाइल से स्कैन करने पर शिकायत कर्ता को 12 विकल्प मिलेंगे। जिसमें 11 विकल्प में से 1 विकल्प को चुनना होगा। स्कैनर का उद्देश्य है कि पीड़ित का थानों में व्यवहार, कार्यप्रणाली, अपारदर्शी आदि के बारे में जानना।



शिकायतों का चयन करना होगा

शिकायत का चयन जैसे कि- साइबर अपराध, घरेलू हिंसा, सड़क दुर्घटना, सम्पति विवाद, सामाजिक विवाद, गुणवत्ता, महिला विरुद्ध अपराध, बल अपराध, पासपोर्ट, चरित्र प्रमाण पत्र, त्यौहार के संबंध में अनुमति बारे, आपराधिक धमकी, विदेश भेजने बारे, चोरी, डकैती, गृह भेदन, चोरीशुद्ध वाहन, धोखाधड़ी, जालसाजी के संबंध में, लड़ाई-झगड़ा, हत्या, हत्या का प्रयास, आमजननी व अन्य का चयन करना होगा।

तुरंत कार्रवाई करेंगे अधिकारी

सभी विकल्पों का चयन करके सबमिट करना होगा। सबमिट करने के बाद आपकी रिपोर्ट फीडबैक सेल, पुलिस अधीक्षक कार्यालय में प्राप्त होगी। जिस पर तुरंत कार्रवाई की जाएगी। आपकी रिपोर्ट जमा होने पर फीडबैक सेल, पुलिस अधीक्षक कार्यालय से वेरिफिकेशन के लिये कॉल किया जाएगा और आपकी शिकायत के संबंध या सुझाव के संदर्भ में आगे की कार्यवाही अमल में लायी जाएगी। -सुरेन्द्र सिंह मौरिया, पुलिस अधीक्षक

एक बार में सिर्फ एक ही थाना और चौकी का चयन किया जाएगा

पुलिस अधीक्षक सुरेन्द्र सिंह मौरिया ने बताया कि जिला पुलिस द्वारा फीडबैक के लिये रोहतक पुलिस फीडबैक क्यू आर कोड जारी किया गया है। जिला में स्थित सभी थानों व चौकियों में रोहतक पुलिस फीडबैक (क्यू आर कोड) स्कैनर लगाया गया है। जिससे मोबाइल से स्कैन करने पर शिकायतकर्ता को 12 विकल्प मिलेंगे। जिसमें 11 विकल्पों में से प्रत्येक में से 1 विकल्प को चुनना होगा। उन्होंने बताया कि कोड स्कैन करने पर पहले व्यक्ति को जिला रोहतक में स्थित सभी थानों चौकी का चयन करने का विकल्प होगा। एक बार में सिर्फ एक ही थाना, चौकी चयन किया जाएगा। शिकायतकर्ता द्वारा जिस थाने में शिकायत दी गई है वह उस थाना का चयन करें। थाना चयन करने के बाद अगले विकल्प में शिकायतकर्ता को अपना नाम, मोबाइल नम्बर व शिकायत की तिथि दर्ज करनी होगी। जिसके बाद पीड़ित को अपनी शिकायत का प्रकार का चयन करना होगा।

1 नवंबर से लेकर 05 नवंबर तक का रेटिंग स्केल दिया गया

इसके बाद अगला विकल्प कार्यालय का वातावरण स्वच्छ एवं सुचारु चलित था। इसका हों या नहीं में चयन करना होगा। क्या आपको थाने के अंदर सुरक्षित महसूस हुआ। क्या थाने में आने पर आपका त्वरता से स्वागत किया गया। आगे जैसा विकल्प होगा कि अधिकारी और कर्मचारियों का व्यवहार आपको कितना विनम्र और सम्मानजनक लगा जिसमें 1 नवंबर से लेकर 05 नवंबर तक की रेटिंग स्केल दिया गया है। व्यक्ति अपनी इच्छा अनुसार रेटिंग का चयन कर सबमिट करने। आगे आपको कार्य की प्रतिक्रिया कितनी आसान और पारदर्शी लगी। जिसके उतर में आपको 01 से लेकर 05 तक रेटिंग देनी होगी। 1 रेटिंग स्केल चयन करने का मतलब है कि बहुत कठिन, अपारदर्शी व 05 रेटिंग चयन करने का मतलब होगा बहुत आसान और पारदर्शी। शिकायत के संदर्भ में आखिर में युवक को अपनी समस्या का समाधान आपकी उम्मीद के अनुसार हुआ है उसका हों या ना में दिये गये विकल्प का चयन करना होगा। इसके अतिरिक्त लास्ट प्वाइंट में थाने के लिये कोई विशिष्ट प्रतिक्रिया या सुझाव लिखित रूप में साझा कर सकते हैं।

डिप्लोमा इंजीनियर्स एसोसिएशन ने की वेतन विसंगतियों को दूर करने की मांग



रोहतक। हरियाणा दिवस के मौके पर डिप्लोमा इंजीनियर्स एसोसिएशन हरियाणा की एक प्रदेश स्तरीय बैठक हेड ऑफिस डिप्लोमा इंजीनियर एसोसिएशन भवन सुखपुरा चौक रोहतक पर संपन्न हुई। बैठक का मुख्य उद्देश्य संगठन को और अधिक सशक्त बनाना तथा डिप्लोमा इंजीनियर्स की समस्याओं और मांगों पर सामूहिक रणनीति तैयार करना रहा। इस बैठक में मुख्य तौर पर एसोसिएशन की वेतन विसंगतियों को दूर करने की मांग को उठाया गया, जिसमें से प्रमुख डिमांड पेंशन को बढ़ाकर 47600 करने, प्रवेशन कोटा 50% से 75% करने और एसीपी 5-11-17 साल पर देने की डिमांड को प्रमुखता से रखा गया। बैठक के दौरान सभी जिला प्रभागों ने अपने-अपने विचार एवं सुझाव साझा किए और एसोसिएशन के हित में ठोस कदम उठाने की आवश्यकता पर बल दिया। सभी सदस्यों ने एकजुट होकर संगठन को मजबूत बनाने का संकल्प लिया।

पीएनबी पेंशनर्स एसोसिएशन ने आरजू परवीन को अपनी मांगों का ज्ञापन सौंपा



रोहतक। अखिल भारतीय पीएनबी पेंशनर्स एवं रिटायरीज एसोसिएशन ने पीएनबी रोहतक सर्कल की प्रमुख आरजू परवीन को अपनी मांगों का ज्ञापन सौंपा। यह ज्ञापन पीएनबी के एमडी एवं सीईओ अशोक चंद्र के नाम संबोधित है, जिसमें सर्कल प्रमुख से अनुरोध किया गया है कि वह इसे शीघ्र विचारार्थ एमडी एवं सीईओ को अर्पित करें।

आंदोलन की चेतावनी: एसोसिएशन ने चेतावनी दी है कि यदि मांगों पर सरकारत्मक कार्रवाई नहीं होती, तो परिषद आंदोलन को तेज करने का निर्णय ले सकती है, जिसमें धरना, प्रदर्शन एवं रिले भूख हड़ताल शामिल हैं। इसके लिए पीएनबी प्रबंधन एवं सरकार ही जिम्मेदार होंगे। ज्ञापन सौंपने वाले प्रतिनिधिमेंडल में एम.एल. अरोड़ा (सर्कल सचिव एवं राज्य महासचिव), परवीन बत्रा हरीश आजाद (संगठन सचिव, राज्य), एम.के. गुलाटी एसपी रंगा, एसके. मुकुल, ओ.पी. निगनिया, एसके. नागपाल शामिल रहे।

पूर्व मुख्यमंत्री का हरियाणा दिवस पर सरकार पर हमला

कांग्रेस राज में हरियाणा बना नंबर-1 भाजपा ने पटरी से उतारा: भूपेंद्र हुड्डा

कुरुक्षेत्र, पानीपत, राखीगढ़ी तक हरियाणा के प्राचीन व गौरवमयी इतिहास के गवाह

हरिभूमि न्यूज | रोहतक

पूर्व मुख्यमंत्री एवं नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने हरियाणा दिवस पर कहा कि हरियाणा भले ही 1 नवंबर 1966 को अलग प्रदेश बना था, लेकिन हमारी संस्कृति और सभ्यता सदियों पुरानी है। महाभारत का युद्ध हरियाणा के कुरुक्षेत्र में ही लड़ा गया, जिसने अन्याय पर न्याय की जीत का संदेश पूरी दुनिया को दिया। राखीवादी हड़प्पा सभ्यता के समय की है और हमारे प्राचीन अस्तित्व को प्रमाणित करती है। उसके बाद पानीपत में हुए युद्धों ने पूरे भारत के शासन और भविष्य को तय किया। भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने शनिवार को पत्रकारों से बातचीत में कहा कि अंग्रेजों के समय हरियाणा को पंजाब के साथ जोड़ दिया गया था, लेकिन लंबे समय तक विकास के मामले में हरियाणा काफी पिछड़ा क्षेत्र बना रहा। इसलिए हरियाणा को पंजाब से अलग करने की मांग उठने लगी। उस समय चौधरी रणबीर सिंह हुड्डा



रोहतक। पत्रकारों से बातचीत करते पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा।

समेत व अन्य नेताओं का अलग प्रदेश बनाने में ऐतिहासिक योगदान रहा और हरियाणा अस्तित्व में आया। हरियाणा की मेहनती जनता और तमाम सरकारों ने इन संदेहों व प्रश्नों पर अंकुश लगाते हुए देश के सामने प्रगति की एक अलग मिसाल पेश की। भगवत दयाल शर्मा, राव बोरेंद्र सिंह, चौधरी बंसी लाल, चौ देवीलाल, चौ. भजनलाल, चौ. ओमप्रकाश चौटाला समेत तमाम मुख्यमंत्रियों ने अपने कार्यकाल में हरियाणा को आगे लेकर जाने के लिए अपना योगदान दिया।

सख्त कार्रवाई

शहर को अतिक्रमण मुक्त बनाने के लिए नगर निगम की सख्त कार्रवाई

स्वयं कब्जे को हटा लें अन्यथा निगम नियमों के अनुसार उनका सामान जब्त करेगा

हरिभूमि न्यूज | रोहतक

शहर की सड़कों और बाजारों को अतिक्रमण मुक्त बनाने के लिए नगर निगम द्वारा लगातार अभियान चलाया जा रहा है। निगम का उद्देश्य शहर के मुख्य मार्गों और बाजार क्षेत्रों में स्वच्छता और सुगमता बनाए रखना है, ताकि नागरिकों और राहगीरों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। नगर निगम आयुक्त डॉ. आनंद कुमार शर्मा ने बताया कि निगम द्वारा बार-बार चेतावनी देने के बाद भी कुछ दुकानदारों ने अपने प्रतिष्ठानों के बाहर अवैध निर्माण और सामान फैला रखा है। ऐसे में अब निगम सख्त कार्रवाई के मूड में है। शनिवार को भू-अधिकारी संदीप बत्रा के नेतृत्व में नगर निगम की एम्प्लोईमेंट टीम विशेष अभियान चलाया। टीम ने बाजारों का निरीक्षण किया और कई दुकानदारों को अतिक्रमण मुक्त बनाने के लिए चेतावनी जारी की। कई स्थानों पर



रोहतक। अतिक्रमण हटवाते नगर निगम की टीम एवं दुकानदारों के साथ मीटिंग करते भू-अधिकारी संदीप बत्रा व अन्य नगर निगम अधिकारी।



दुकानदारों द्वारा सड़क, फुटपाथ और गलियों में मेज, काउंटर, फ्लैक्स बोर्ड, तख्त, छज्जे और अन्य सामग्री रखी गई थी। टीम ने दुकानदारों को स्पष्ट कहा कि वे स्वयं इस अवैध कब्जे को तुरंत हटा लें, अन्यथा निगम नियमों के अनुसार उनका सामान जब्त करेगा और अतिक्रमण को बलपूर्वक हटाया जाएगा। नगर निगम की ओर से

बताया गया कि गांधी कैम्प मार्केट एसोसिएशन के साथ बैठक कर दुकानदारों को पहले ही अवगत करवा दिया गया है कि अतिक्रमण से बाजार का स्वरूप बिगड़ रहा है और राहगीरों को परेशानी हो रही है। निगम निगम नियमों के मामले में हरियाणा काफी पिछड़ा क्षेत्र बना रहा। इसलिए हरियाणा को पंजाब से अलग करने की मांग उठने लगी। उस समय चौधरी रणबीर सिंह हुड्डा

यह अभियान अलग-अलग हिस्सों में रहेगा जारी

नगर निगम का यह अभियान शहर के विभिन्न हिस्सों में आगामी दिनों में भी जारी रहेगा। निगम के अनुसार, सड़कों और बाजारों को साफ-सुथरा और सुगम बनाने केवल प्रशासन की नहीं, बल्कि नागरिकों की भी सामूहिक जिम्मेदारी है। इसलिए निगम ने सभी व्यापारियों और नागरिकों से सहयोग करने की अपील की है। भू-अधिकारी संदीप बत्रा के नेतृत्व में गांधी कैम्प मार्केट और डी.पी.के. क्षेत्र में विशेष अभियान चलाया गया। टीम ने दुकानदारों को अतिक्रमण मुक्त बनाने के लिए चेतावनी दी और अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए।

किसी को बख्शा नहीं जाएगा

निगम ने स्पष्ट किया है कि देबाबा अतिक्रमण करने वालों का सामान जब्त किया जाएगा और जुर्माना लगाया जाएगा। दोषी दुकानदारों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई भी की जाएगी। वहीं गांधी कैम्प मार्केट एसोसिएशन के साथ बैठक कर दुकानदारों को निगम की नीति और आगामी कार्रवाई के बारे में पहले ही सूचित किया जा चुका है। नगर निगम आयुक्त ने कहा कि शहर को स्वच्छ और व्यवस्थित रखना सभी की जिम्मेदारी है।

स्मॉल कैप फंड्स ने 26 फीसदी तक दिया रिटर्न भर दी निवेशकों की झोली

स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड्स हमेशा से हाई रिटर्न के लिए जाने जाते रहे हैं। हालांकि इनके रिटर्न पर बाजार से जुड़े उतार-चढ़ाव का असर भी पड़ता है, लेकिन आंकड़े बताते हैं कि लंबी अवधि में पॉजिटिव रिटर्न मिलने की गुंजाइश काफी अधिक रहती है। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) की वेबसाइट पर जिन 13 स्मॉल कैप फंड्स के पिछले 10 साल के आंकड़े मौजूद हैं, उनमें से किसी के भी डायरेक्ट प्लान का सालाना रिटर्न (सीएजीआर) 14% से कम नहीं है। यही नहीं, इनमें से टॉप 5 स्मॉल कैप फंड्स ने लॉन्ग टर्म निवेश पर पिछले 10 साल में 19 से 21% फीसदी तक एनुअल रिटर्न दिया है।

एसआईपी पर भी ऊंचा रिटर्न

टॉप 5 स्मॉल कैप फंड्स ने पिछले 10 साल में लॉन्ग टर्म के साथ ही साथ रिस्ट्रिक्टेड इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिये निवेश करने वालों को भी 19% से लेकर 26% तक एनुअलाइज्ड रिटर्न दिए हैं। इस शानदार रिटर्न की बदौलत इन फंड्स ने 1 लाख रुपये के एकमुश्त निवेश को 10 साल में 7 लाख रुपये तक बना दिया है, जबकि 10 हजार रुपये की एसआईपी से 10 साल में 47.5 लाख रुपये तक का फंड जमा हुआ है।

ये टॉप 5 स्कीम

टॉप 5 स्मॉल कैप फंड्स की लिस्ट में एचडीएफसी म्यूचुअल फंड, एसबीआई म्यूचुअल फंड, निपॉन इंडिया म्यूचुअल फंड, एक्सिस म्यूचुअल फंड और क्वांट म्यूचुअल फंड जैसे दिग्गज फंड हाउस की स्कीम शामिल हैं।

लॉन्ग टर्म इनवेस्टमेंट क्यों है बेहतर

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के पिछले आंकड़ों के तमाम विश्लेषण यही बताते हैं कि इनमें लंबी अवधि के लिए निवेश करना बेहतर रहता है। हालांकि इनमें आई ऐसी ही एक रिपोर्ट के मुताबिक निप्टी स्मॉल कैप 250 इंडेक्स का 10 साल की एसआईपी का मंथली रोलिंग रिटर्न (एक्सआरआरआर) 99% समय पॉजिटिव रहा है। यानी अगर इक्विटी में निवेश करना हो, तो लॉन्ग टर्म एसआईपी उसका बेहतर तरीका है।



10 साल में बेस्ट रिटर्न देने वाले टॉप फंड

फंड का नाम	10 साल में रिटर्न (सीएजीआर)	1 लाख के लॉन्ग टर्म से 10 साल में फंड वैल्यू	एसआईपी पर 10 साल का एनुअलाइज्ड रिटर्न	10 हजार मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू	एक्सपेंस रेशियो
निपॉन इंडिया स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान	21.51%	7,01,649 रुपये	23.96%	42,63,065 रुपये	0.64%
क्वांट स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान	20.42%	6,41,189 रुपये	25.99%	47,56,696 रुपये	0.71%
एक्सिस स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान	19.91%	6,14,545 रुपये	21.43%	38,35,386 रुपये	0.57%
एसबीआई स्मॉल कैप फंड-डायरेक्ट प्लान	19.44%	5,90,878 रुपये	21.43%	34,65,264 रुपये	0.76%



हाई रिटर्न, हाई रिस्क इनवेस्टमेंट
ऊपर दी गई सभी स्कीम समेत तमाम स्मॉल कैप फंड्स को रिस्कमीटर पर बहुत अधिक रिस्क की रेटिंग दी जाती है। अलग-अलग मार्केट केप पर आधारित म्यूचुअल फंड्स में भी स्मॉल कैप को मिड कैप और लार्ज कैप की तुलना में ज्यादा रिस्क माना जाता है। यानी स्मॉल कैप फंड हाई रिटर्न, हाई रिस्क इनवेस्टमेंट की कैटेगरी में आते हैं। इसके अलावा म्यूचुअल फंड्स में पिछले रिटर्न के आगे भी जारी रहने की कोई गारंटी नहीं होती। इसलिए इनमें निवेश के बारे में कोई फेरफाल करने से पहले अपनी रिस्क लेने की क्षमता को ध्यान में रखना चाहिए।

व्या है स्मॉल कैप फंड्स
स्मॉल कैप फंड्स एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है जो छोटी कंपनियों के शेयरों में निवेश करता है। इन कंपनियों की मार्केट कैपिटलाइजेशन कम होती है, लेकिन इनमें उच्च विकास क्षमता होती है। स्मॉल कैप फंड्स की विशेषताएं

279 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में से 276 ने पॉजिटिव रिटर्न दिया

बिगनेस डेस्क

पिछले एक साल में इक्विटी म्यूचुअल फंड्स ने निवेशकों को मालामाल कर दिया है। पिछले साल यानी 2024 की दिवाली से लेकर अब तक 279 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में से 276 फंड्स ने पॉजिटिव रिटर्न दिया। यानी इनमें निवेश करने वाले निवेशकों को मुनाफा हुआ। वहीं, सिर्फ तीन फंड्स ऐसे रहे जिन्होंने निवेशकों को नुकसान पहुंचाया। सबसे खास बात यह है कि 10 ऐसे इक्विटी म्यूचुअल फंड्स हैं जिन्होंने एसआईपी यानी एक तय रकम हर महीने निवेश करने वालों को 20% से भी ज्यादा का सालाना रिटर्न दिया है। पिछली दिवाली से लेकर अब तक एक साल में कई म्यूचुअल फंड ने निवेशकों को जबर्दस्त रिटर्न दिया है। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसे ही कुछ फंडों के बारे में जो आपको अच्छा मुनाफा दे सकते हैं।

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के प्रकार

- लार्ज कैप फंड्स : ये फंड्स बड़ी मार्केट कैपिटलाइजेशन वाली कंपनियों में निवेश करते हैं।
- मिड कैप फंड्स : ये फंड्स मध्यम आकार की कंपनियों में निवेश करते हैं।
- स्मॉल कैप फंड्स : ये फंड्स छोटी कंपनियों में निवेश करते हैं।
- मल्टीकैप फंड्स : ये फंड्स विभिन्न मार्केट कैपिटलाइजेशन वाली कंपनियों में निवेश करते हैं।
- फोकस्ड फंड्स : ये फंड्स सीमित संख्या में शेयरों में निवेश करते हैं।
- सेक्टरल फंड्स : ये फंड्स विशिष्ट क्षेत्रों में निवेश करते हैं।

ग्रो मल्टीकैप फंड

इस लिस्ट में सबसे ऊपर ग्रो मल्टीकैप फंड का नाम है। इसने एसआईपी निवेश पर सबसे ज्यादा करीब 26% रिटर्न दिया है। इसका मतलब है कि अगर आपने इस फंड में हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी की होती, तो पिछली दिवाली से अब तक आपके निवेश की कीमत लगभग 1.10 लाख रुपये हो जाती। यानी आपके लगाए हुए पैसों से ज्यादा का मुनाफा हुआ।

इन्वेस्टो इंडिया मिडकैप फंड

इन्वेस्टो इंडिया मिडकैप फंड ने भी निवेशकों को अच्छा रिटर्न दिया है। इसने इसी अवधि में 24.69% का शानदार दिया। मिडकैप फंड्स उन कंपनियों में निवेश करते हैं जिनका मार्केट कैप मीडियम होता है यानी वे बहूत बड़ी भी नहीं होतीं और बहुत छोटी भी नहीं।

हेलिऑस लार्ज एंड मिड कैप फंड

हेलिऑस लार्ज एंड मिड कैप फंड और आईसीआईसीआई पू फ्लेक्सिबल फंड ने भी निवेशकों को निराश नहीं किया। इन्होंने क्रमशः 23.82% और 23.22% का एक्सआईआर आर दिया। फ्लेक्सिबल फंड्स की खासियत यह होती है कि फंड मैनेजर किसी भी साइज की कंपनी में निवेश करने के लिए स्वतंत्र होते हैं, चाहे वह लार्ज-कैप हो, मिड-कैप हो या स्मॉल-कैप।

मोतीलाल ओसवाल लार्ज एंड मिडकैप फंड

मोतीलाल ओसवाल लार्ज एंड मिडकैप फंड ने 22.33% का एक्सआईआर आर दिया। इस फंड में अगर किसी ने हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी की होती, तो आज उसके निवेश की कीमत लगभग 1.33 लाख रुपये हो जाती। यह दिखाता है कि एसआईपी के जरिए लंबी अवधि में कैसे अच्छी खासी रकम जमा की जा सकती है।

कोटक फोकस्ड फंड

कोटक फोकस्ड फंड ने भी 22.06% का एक्सआईआर आर दर्ज किया। फोकस्ड फंड्स में फंड मैनेजर कुछ चुनिंदा स्टॉक्स में ही निवेश करते हैं, जिससे उनका फोकस बना रहता है। इनके अलावा मीरा एस्टेट मिडकैप फंड ने 20.55% का एक्सआईआर आर दिया। इसके बाद आईसीआईसीआई फ्लेक्सिबल म्यूचुअल फंड के दो फंड्स ने भी 20% के आंकड़े को पार किया।

निवेश की ऐसे प्लानिंग करेंगे तो भविष्य में कभी नहीं होगी पैसों की टेंशन

उम्र का हर दशक अपनी अलग-अलग जिम्मेदारियां और मौके लेकर आता है
20 साल की उम्र रिस्क लेने का समय होता है, काम करने की क्षमता अधिक होती
30 साल की उम्र में बैलेंस और 40 साल की उम्र में ग्रोथ पर फोकस जरूरी होता है
अगर आप भी निवेश कर रहे हैं या अपनी निवेश यात्रा करना चाहते हैं तो अपने लक्ष्य, परिवार, इनकम और बच्चों की स्थिति को देखकर ही निवेश यात्रा शुरू करें। बेहतर प्लानिंग के साथ निवेश करने तो भविष्य में आसानी होगी और आर्थिक रूप से संपन्न रहेंगे। कइते हैं उम्र का हर दशक अपनी अलग-अलग जिम्मेदारियां और मौके लेकर आता है। 20 साल की उम्र में जहां रिस्क लेने का समय होता है, काम

उम्र के हिसाब से करें प्लानिंग, 20 में रिस्क 30 में बैलेंस और 40 साल में ग्रोथ जरूरी

बजट बनाना सीखें
अपनी कमाई और खर्च का हिसाब रखें। 80/20 का नियम अपनाएं यानी 80% खर्च और 20% बचत या निवेश। इससे आपको अपने पैसों का प्लो समझ आएगा और आप बेवजह खर्चों को कंट्रोल कर पाएंगे।
इमरजेंसी फंड बनाएं
हर महीने के खर्च का 3 से 6 महीने तक का फंड अलग रखें। जैसे अगर आपका खर्च 25,000 रुपये महीना है, तो कम से कम 75,000-1,50,000 रुपये का इमरजेंसी फंड जरूरत होना चाहिए, ताकि किसी भी परेशानी के समय यह काम आ सके और आपको किसी के मुँह की ओर न देखना पड़े।
इंश्योरेंस लेना न भूलें
कम उम्र में प्रीमियम सस्ता होता है। हेल्थ और टर्म इंश्योरेंस दोनों ले। ताकि मेडिकल और लाइफ रिस्क से सुरक्षा बनी रहे। कोई भी परेशानी आने पर परिवार पर अतिरिक्त दबाव न पड़े।
जल्दी निवेश शुरू करें
कम्पाउंडिंग की ताकत का फायदा तभी मिलता है जब शुरुआत जल्दी की जाए। आपका रिटर्न और पॉपीएफ जैसी स्कीम में निवेश कर सकते हैं। इसमें निवेश सुरक्षित है और महंगाई को मात देना या रिटर्न भी मिलता है।

जानकारी बिगनेस डेस्क

30 साल की उम्र जिम्मेदारियों व निवेश में बैलेंस का समय
इस दशक में शादी, बच्चों की पढ़ाई और घर की प्लानिंग जैसी जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं। ऐसे में बैलेंस बनाना जरूरी हो जाता है।
फाइनेंशियल गोल्स अपडेट करें बच्चों की पढ़ाई, घर खरीदने या रिटायरमेंट जैसे लक्ष्यों को री-इवैल्यूएट करें। हर 2 साल में अपने पोर्टफोलियो की समीक्षा करें।
एसआईपी बढ़ाते रहें सैलरी बढ़ने के साथ हर साल अपनी एसआईपी में 10-15% इजाफा करें। कोशिश करें कि इनकम का 30-40% निवेश में लगाएं।
एसेट एलोकेशन पर ध्यान दें 40% इक्विटी, 40% डेट और 20% गोल्ड या पीपीएफ जैसे सुरक्षित निवेश रखें। इससे रिस्क और रिटर्न में सही संतुलन बना रहेगा।
एनपीएस में निवेश करें नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) टैक्स छूट देता है और रिटायरमेंट के लिए मजबूत फंड तैयार करता है।

अधूरे दस्तावेज या अधूरी जानकारी के साथ निवेश की शुरुआत नहीं हो सकेगी

म्यूचुअल फंड निवेश प्रक्रिया में हो रहे हैं अहम बदलाव, निवेशकों पर क्या होगा असर

अभी तक कई मामलों में अकाउंट केवाईसी प्रक्रिया पूरी होने से पहले ही खुल जाता था

एक बार फिर म्यूचुअल फंड प्रक्रिया में बदलाव हो रहे हैं। इसका निवेशकों पर भी असर पड़ना स्वाभाविक है। इसके कुछ फायदे होंगे तो कुछ नुकसान भी निवेशकों को भुगतने पड़ सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि आप भी निवेशक हैं या निवेश यात्रा शुरू करने जा रहे हैं तो आप अलर्ट हो जाएं और सभी दस्तावेजों को जांचके के बाद ही निवेश यात्रा शुरू करें। बताया जा रहा है कि मार्केट रेगुलेटर सेबी द्वारा एक बार फिर म्यूचुअल फंड के नियमों में रिफॉर्म का प्रपोजल लाया गया है। सेबी ने निवेशकों और एसेट मैनेजमेंट कंपनियों (एएमसी) को हो रही दिक्कतों को कम करने के लिए नए म्यूचुअल फंड फॉलियो में पहली बार किए जाने वाले निवेश (पहला ट्रांजेक्शन) की प्रक्रिया को एक जैसा (स्टैंडर्ड) बनाने का प्रस्ताव दिया है। सेबी ने प्रस्ताव रखा है कि अब म्यूचुअल फंड अकाउंट केवल तब ही खोले जा सकेंगे जब निवेशक की केवाईसी प्रक्रिया पूरी तरह से सत्यापित हो जाएगी। हालांकि सेबी की तरफ से की जा रही इस कार्यवाही से निवेशकों को लाभ ही होगा और वे किसी भी तरह के फर्जीवाड़े से बच सकेंगे।

अब से पहले, म्यूचुअल फंड्स के निवेशकों को अपने निवेश के रिस्क पैरामीटर्स की जानकारी महीने के अंत में मिलती थी, यह जानकारी हर महीने के 15 दिन के भीतर उपलब्ध होगी।

सेबी म्यूचुअल फंड के नियमों में रिफॉर्म का प्रपोजल लाया, सभी दस्तावेज देने होंगे

असल में मार्केट रेगुलेटर सेबी द्वारा समय समय पर म्यूचुअल फंड के नियमों में कुछ न कुछ बदलाव किया जाता है, ताकि निवेशकों का हित बना रहे, साथ ही एसेट मैनेजमेंट कंपनियों को भी आसानी हो। वहीं कुछ सालों में म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री का लोकप्रियता निवेशकों के बीच बहुत ज्यादा बढ़ी है। इंडस्ट्री का कुल एयूएम 75 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा हो गया है। ऐसे में सेबी समय समय पर यह ध्यान रखती है कि नियमों में कुछ बदलाव किया जाए या रिफॉर्म किया जाए। वहीं कुछ महीनों में सेबी ने कुछ बदलाव या रिफॉर्म किए हैं और आगे के लिए भी कुछ प्रपोजल हैं। ये निवेशकों को म्यूचुअल फंड में निवेश के दौरान बड़ी राहत देने का काम करेंगे। आप भी निवेश करने जा रहे हैं अपने दस्तावेजों को साथ रख लें।

डिस्क्लोजर नियमों में बदलाव

एफएफआई और सेबी ने छोटे निवेशकों की सुरक्षा के लिए डिस्क्लोजर नियमों में बदलाव किया है। निवेशकों को अपने निवेश के लिए अधिक स्पष्ट और विस्तृत जानकारी प्राप्त करने का अधिकार होगा। यह नियम निवेशकों को उनके निवेश के लिए सही और समय पर जानकारी प्राप्त करने में मदद करेगा।

कट-ऑफ टाइम में बदलाव

इस साल सेबी ने ओवरनाइट म्यूचुअल फंड स्कीम के लिए कट-ऑफ टाइम में बदलाव किया है। 1 जून 2025 से ऑफलाइन लेनदेन का समय दोपहर 3 बजे तक हो गया है। ऑनलाइन लेनदेन का समय शाम 7 बजे तक है। इन समयों के बाद किए गए लेनदेन अगले कारोबारी दिन प्रोसेस होंगे, जिससे एनएवी (नेट एसेट वैल्यू) बदल सकती है। बदलाव प्लेजिंग (गिरवी रखने) की प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए किया गया है।

एनएफओ को लेकर क्या बदलाव

एसेट मैनेजमेंट कंपनियों को न्यू फंड ऑफर (एनएफओ) से जुड़ाए गए पैसों को तय समय में निवेश करना होगा। अगर वे ऐसा नहीं करते, तो निवेशक बिना एग्जिट लोड दिए अपना पैसा निकाल सकते हैं। यह नियम एएमसी को जरूरत से ज्यादा पैसा जुटाने से रोकेंगा और सही जगह निवेश सुनिश्चित करेगा। इसके लिए 30 दिन का समय निर्धारित है।

स्ट्रेस टेस्ट के नतीजे बताने होंगे

म्यूचुअल फंड स्कीम को स्ट्रेस टेस्ट के नतीजे बताने होंगे, ताकि निवेशकों को स्कीम की वित्तीय स्थिति का सही अंदाजा हो सके। एएमसी कर्मचारियों की सैलरी का कुछ हिस्सा म्यूचुअल फंड स्कीम में लगाया जाएगा। कितना पैसा और कितनी स्कीम में निवेश होगा, यह उनकी भूमिका पर निर्भर करेगा। इससे कर्मचारियों और निवेशकों का हित एक जैसा होगा।

खबर संक्षेप

चार महीने में भी खेतों से नहीं निकला बरसाती पानी

रोहतक। इनलो के गद्दी सांपला किलोई हलके के प्रधान सतीश नंदल रिवाल ने कहा कि खेतों से बरसाती पानी की निकासी नहीं होने से किसान पूरी तरह से परेशान है और भाजपा सरकार किसानों की आमदनी बढ़ाने के बड़े दावे कर रही है। उन्होंने कहा कि चार महीने से ज्यादा समय से कलानौर, महम व गद्दी सांपला किलोई क्षेत्र के खेतों में बरसात का पानी खड़ा है, लेकिन अभी तक सरकार ने पानी निकासी का कोई प्रबंध नहीं किया है। खेतों में पानी खड़ा होने से किसानों की फसले पूरी तरह से बर्बाद हो चुकी है और अब किसानों को अगली फसल की बुआई की चिंता सता रही है, लेकिन सरकार कुंभकर्णी नदी में सोई हुई है।

एमडीयू में हुई विजय प्रतियोगिताएं

रोहतक। यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (यूआईईटी) महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के बायोटेक्नोलॉजी विभाग के जेनरल मैनेजर के तत्वावधान में शनिवार को विजय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ यूआईईटी के निदेशक प्रो. अश्वनी ढींगरा और इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी संकाय की डीन प्रो. सोनिया द्वारा किया गया। प्रतियोगिता में विभिन्न सेमेस्टर्स के छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपने ज्ञान और टीम भावना का परिचय दिया। कार्यक्रम के दौरान विभाग के सभी शिक्षक उपस्थित रहे। छात्र समन्वयक तनिका, अंजली, अदिति और अकरषक ठाकुर ने प्रतियोगिता के सफल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्रमिकों के लिए एक महीने तक चलेगा विशेष अभियान रोहतक। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से श्रमिक सुरक्षा एवं अधिकार अभियान के तहत एक महीने तक विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसमें ग्रामीण स्तर तक श्रमिकों को उनके अधिकारों एवं सुरक्षा संबंधी प्रावधानों के प्रति जागरूक किया जाएगा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं सीजेएम तरनुम खान ने बताया कि यह अभियान 1 से 30 नवम्बर तक चलाया जाएगा।



महम। हरियाणा दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेती डॉ. रामचंद्रा विद्यापीठ की छात्राएं। फोटो: हरिभूमि

डॉ रामचंद्रा कन्या विद्यापीठ में हरियाणा उत्सव की धूम

महम। डॉ. रामचंद्रा विद्यापीठ में शुक्रवार को हरियाणा दिवस के मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। विद्यार्थियों ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से हरियाणवी कला और संस्कृति की छटा बिखरने का काम किया। हरियाणा प्रदेश के पहचाने खानपान को लेकर भी विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न प्रस्तुतियां दी गईं। प्राचार्या सुशीला पूनिया ने बच्चों को हरियाणा दिवस का महत्व बताया। साथ ही जानकारों की कि हमारी संस्कृति ने विदेशों में भी अपनी अलग पहचान बनाई है। प्रदेश के गौतम संगीत की देश की हर कोने के साथ ही दुनिया में बन रही है। विभिन्न प्रस्तुतियों के माध्यम से विद्यार्थियों ने हरियाणा के गौरवशाली भूमि के प्रति अपनी कुतूहलता व समान व्यक्त किया, जो हम सबके लिए गर्व की बात है। इस अवसर पर प्राचार्या डॉ. सुशीला पूनिया ने कहा हम सभी को चाहिए कि मिलकर हरियाणा की संस्कृति, गौरवशाली इतिहास और विकास की ओर बढ़ने का संकल्प लें और अंत में उन्होंने सभी को हरियाणा दिवस की शुभकामनाएं दीं।

देवउठनी एकादशी पर बाबा श्याम की 2100 निशानों की भव्य यात्रा निकाली

रोहतक। फ्रेंड्स सेवा समिति की ओर से देवउठनी एकादशी के अवसर पर शनिवार को बाबा श्याम की 2100 निशानों की भव्य यात्रा निकाली गई। यह शोभायात्रा दुर्गा भवन मंदिर से प्रारंभ होकर पीपल वाली गली स्थित श्याम मंदिर में संपन्न हुई। यात्रा में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर बाबा का आशीर्वाद लिया। यात्रा के दौरान बाबा का भव्य श्रृंगार कलकत्ता से लाए गए फूलों से किया गया और छपन प्रकार के भोग लगाए गए, जिन्हें बाद में भक्तों में प्रसाद स्वरूप वितरित किया गया। नासिक के दोल

युवा कार्यक्रम के तहत मैणी महाराजपुर गांव में हुई खंड स्तरीय खेल प्रतियोगिता लड़कियों की दौड़ में मानसी रही प्रथम, लंबी कूद में पायल जीती

प्रतियोगिता में पुरुष व महिला वर्ग में कबड्डी, 400 मीटर दौड़ व लंबी कूद स्पर्धा का आयोजन किया

हरिभूमि न्यूज महम

युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के तहत मेरा युवा भारत रोहतक द्वारा महम खंड में दो दिवसीय खंड स्तरीय खेल प्रतियोगिता आयोजित की गई। यह प्रतियोगिता महम रेलवे स्टेशन के नजदीक मैणी महाराजपुर गांव के खेल ग्राउंड में आयोजित की गई। जिला युवा अधिकारी हरप्रीत ने बताया कि प्रतियोगिता में पुरुष व महिला वर्ग में कबड्डी, 400



महम। खंड स्तरीय खेल प्रतियोगिता में विजेता रहे खिलाड़ियों को प्रशंसा पत्र प्रदान करते खेल आयोजन समिति सदस्य।

मीटर दौड़ व लंबी कूद स्पर्धा का आयोजन किया गया। पुरुषों की कबड्डी प्रतियोगिता में मैणी भैरों गांव की टीम प्रथम विजेता रही। महिला कबड्डी मुकाबलों में महम की लड़कियों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। लड़कियों की दौड़ में मानसी

ने प्रथम, पायल ने द्वितीय व महक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। लड़कों की दौड़ में क्रमशः रवि, चिराग व मोहित ने प्रथम द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया। लड़कियों की लंबी कूद में पायल ने प्रथम, मानसी ने द्वितीय और महक

ने तृतीय स्थान हासिल किया। लड़कों की लंबी कूद में नवीन प्रथम, मोहित द्वितीय और जितन तृतीय स्थान पर रहा। कार्यक्रम का आयोजन पवन राठी के नेतृत्व में रवि भद्र सिंघवा खास और पवन शर्मा के सहयोग से किया गया।

प्रदर्शन को सराहा

खेलों के आयोजक पवन राठी ने बताया कि कबड्डी में निन्दाना की लड़कियों की टीम का शानदार प्रदर्शन रहा। कार्यक्रम में विजेताओं को पुरस्कृत करने के लिए मुख्य अतिथि के तौर पर सदीप कसाला विशिष्ट अतिथि सतेंद्र सुमित व पवन दुल ने कार्यक्रम में शिरकत की। डीपी बड़ाला, रवींद्र, सुनील, नसीब रांगी व पवन शर्मा ने प्रतियोगिता में कोच की भूमिका निभाई। कार्यक्रम के अंत में विजेता प्रतिभागियों को मेडल व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। सभी विजेता टीमों को खेल किट भेंट की गई। इस मौके पर पवन राठी, रवि सिंघवा, पवन शर्मा, नसीब, जितन, हसीन, सदीप, प्रदीप, सतनारायण काला, गौरव, सविन पांडे व रमेश समेत कई खेलप्रेमी मौजूद रहे।

हरियाणा दिवस पर भाजपा एमएसएमई प्रकोष्ठ जिला रोहतक इकाई का गठन

नवनि्युक्त पदाधिकारियों का फूल-मालाओं से किया स्वागत

हरिभूमि न्यूज रोहतक

हरियाणा दिवस के शुभ अवसर पर भारतीय जनता पार्टी द्वारा एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में हरियाणा एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग) सेल के जिला इकाई का गठन किया गया है। यह कदम देश की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी भाजपा एवं भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में हरियाणा के एमएसएमई क्षेत्र को सशक्तिकरण एवं विकास व आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक बड़ा कदम है। इस इकाई की प्रारंभिक शुरुआत



रोहतक। भाजपा एमएसएमई प्रकोष्ठ जिला रोहतक की नवनि्युक्त इकाई।

भाजपा कार्यालय, मंगलकमल से जिला अध्यक्ष रणवीर ढाका, जिला महामंत्री नितिन जैन के सहयोग से की गई। समारोह में मेयर रामावतार वाल्मीकि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजेश जैन (एलपीएस बोसॉर्ड) उपस्थित रहे। एमएसएमई क्षेत्र के सुचारु संचालन एवं विस्तार के लिए

जिला संयोजक सदीप मुंजाल को बनाया गया। जिनके माध्यम से एमएसएमई जिला सह संयोजक राज सिंह पटेल, एमएसएमई जिला आईटी सहयोजक वृजेश गोयल, एमएसएमई रोहतक (भिवानी रोड) प्रमुख अमित कुमार बनाए गए। इसके अतिरिक्त कुलदीप हुड्डा एवं रविंद्र को भी विशेष जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं।

श्रीमद् भागवत कथा में श्रद्धालुओं का उमड़ा सैलाब कृष्ण जन्म की झांकी ने किया सभी को सम्मोहित

हरिभूमि न्यूज रोहतक

सेक्टर 14 स्थित श्री राम मंदिर में चल रही श्रीमद् भागवत कथा के दूसरे दिन भक्तिमय वातावरण में श्रद्धालु झूम उठा। कथा का शुभारंभ भव्य कलश यात्रा के साथ हुआ, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। सुबह 10 बजे निकली यह यात्रा पूरे क्षेत्र में भक्ति और उत्साह का संदेश फैलाती हुई मंदिर परिसर में पहुंची।



रोहतक। श्रीमद् भागवत कथा में पूजा अर्चना करते डॉ. परवीन धायल।

कथा का आयोजन निर्मल एवं समस्त धायल परिवार द्वारा किया जा रहा है। कथा स्थल पर भक्तों की भारी भीड़ उमड़ रही है, जहां रोजाना दोपहर पावन कथा का श्रवण कराया जा रहा है। कथा व्यास के रूप में पूज्य सत्यदेव महाराज ने अपने मधुर वचनों से श्रीमद् भागवत महापुराण की अमृतमयी कथाओं का वर्णन कर रहे हैं। उनके मुखारविंद से निकले

श्रीकृष्ण लीला प्रसंगों ने श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। कथा में विशेष रूप से उपस्थित रहे पंडित गुलेश, कृष्ण, योगेश, सन्ताराम एवं उनकी धर्मपत्नी सरिता रानी, महेंद्र सिंह व उनकी पत्नी गीता देवी, दिनेश व उनकी पत्नी बबीता तथा डॉ. परवीन धायल व उनकी पत्नी

बाल गोपाल की लीलाओं के वर्णन ने किया भाव-विभोर

बाल गोपाल के जन्मोत्सव के इस दृश्य ने सभी भक्तों के हृदयों को प्रेम और आनंद से भर दिया। बच्चे, महिलाएं और युद्ध सभी भाव-विभोर होकर मजान गा रहे थे और प्रभु की महिमा का गुणगान कर रहे थे। कथा के आयोजक परिवार द्वारा श्रद्धालुओं के लिए प्रतिदिन भंडारा की व्यवस्था की गई है, जिसमें प्रतिदिन सैकड़ों भक्त प्रसाद ग्रहण कर रहे हैं। कथा का समापन 5 नवम्बर बुधवार को हवन, पूजाविधि और विशाल भंडारे के साथ होगा। हवन का आयोजन सुबह 10 बजे से होगा तथा दोपहर 12 बजे से भंडारे का शुभारंभ होगा, जो प्रभु इच्छा तक चलेगा।

श्रीकृष्ण लीला प्रसंगों ने श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया।

अंजु। आज कथा के दौरान श्रीकृष्ण जन्म की झांकी निकाली गई, जिसने पूरे परिसर का वातावरण भक्तिरस में डुबो दिया। सुंदर झांकी में जब नंद के घर कान्हा का जन्म हुआ, तो पूरा पंडाल "नंद के आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की" के जयकारों से गूंज उठा।

मदवि के जेनेटिक्स विभाग में विज्ञान क्लब व विजय क्लब की हुई रोचक गतिविधियां

छात्रों में वैज्ञानिक जिज्ञासा, तार्किक सोच और संवाद कौशल को बढ़ावा देने का प्रयास

हरिभूमि न्यूज रोहतक

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के जेनेटिक्स विभाग द्वारा नवगठित विज्ञान क्लब एवं विजय क्लब के तहत एक शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन का समन्वय प्रो. रीतू यादव और प्रो. नीलम सहरावत ने किया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों में वैज्ञानिक जिज्ञासा, आलोचनात्मक सोच तथा अभिव्यक्ति कौशल को प्रोत्साहित करना था। विभाग अध्यक्ष प्रो. संतोष कुमार तिवारी ने



रोहतक। प्रतियोगिता में भाग लेने वाली प्रतिभागी व शिक्षक।

बताया कि कार्यक्रम में दो मुख्य सत्र आयोजित किए गए- प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के जैविक विज्ञान में योगदान विषय पर वक्तृता प्रतियोगिता तथा बेसिक साइंस विजय प्रतियोगिता। एमएससी और बीएससी जेनेटिक्स के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। वक्तृता

प्रतियोगिता में पांच छात्राओं गरिमा, शीतल, नय्या, राशी और आंचल ने प्रभावशाली वक्तव्य प्रस्तुत किए। इन सभी ने जैविक विज्ञान में वैज्ञानिक खोजों के योगदान पर अपने विचार साझा किए। उनकी प्रस्तुति को निर्णायकों एवं श्रोताओं द्वारा सराहा गया।

साइंस विजय प्रतियोगिता के प्रतिभागी

साइंस विजय प्रतियोगिता में चार टीमों टीम ए प्राची, पारुल, पायल और अवि, टीम बी कुनाल, तमन्ना, संजना और अंशिता, टीम सी कनिका, प्रियंका, अंजली और संचिता, टीम डी नय्या, नेवसी, साक्षी और कीर्ति ने विभिन्न राउंड्स में भाग लिया। कई मुकाबले के बाद टीम ए विजेता रही, जिसने उत्कृष्ट टीमवर्क और वैज्ञानिक समझ का प्रदर्शन किया। यह कार्यक्रम जीव विज्ञान संकाय की अधिष्ठाता प्रो. मीनाक्षी वशिष्ठ के मार्गदर्शन में आयोजित हुआ तथा इसमें प्रो. रीतू यादव, प्रो. नीलम सहरावत एवं डॉ. सुकेश तंवर की सक्रिय उपस्थिति रही। जेनेटिक्स विभाग ने अतिथि में भी अपने विज्ञान और विजय क्लबों के माध्यम से ऐसी गतिविधियां आयोजित करते रहने का संकल्प व्यक्त किया।

राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अंतर राष्ट्रीय सहयोग जरूरी: मिश्रा

हरिभूमि न्यूज महम

राजकीय महाविद्यालय महम में रक्षा अध्ययन विभाग द्वारा भारत की वर्तमान सुरक्षा चुनौतियां एवं सुझाव विषय पर विस्तार व्याख्यान आयोजन किया गया। इस दौरान डॉ. एस. के. मिश्रा ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार प्रस्तुत किए।

डॉ. मिश्रा ने भारत की सुरक्षा से जुड़ी विभिन्न चुनौतियों जैसे सीमा सुरक्षा, आंतरिक सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, तथा वैश्विक भू-राजनीतिक परिस्थितियों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा को सशक्त बनाने के लिए तकनीकी उन्नयन, जन-जागरूकता तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग को आवश्यक बताया। वर्कशॉप के दौरान कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रिंसिपल डॉ. सत्यव्रत ने की। प्रिंसिपल ने कहा कि ऐसे व्याख्यान विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एवं वैश्विक सुरक्षा के प्रति



महम। गवर्नमेंट कॉलेज महम के विद्यार्थियों को विस्तार व्याख्यान देते डॉ. एसके मिश्रा।

जागरूकता बढ़ाने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं। व्याख्यान के अंत में छात्र छात्राओं ने कई प्रश्न पूछे। डॉ. मिश्रा ने प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक दिए। प्रिंसिपल ने बताया कि यह विस्तार व्याख्यान विद्यार्थियों के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक रहा। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. दीपक कुमार, डॉ. भूपेन्द्र सिंह, फुल कंवर, डॉ. शिल्पी व अन्य स्टाफ सदस्य मौजूद थे।



रोहतक। बाबा श्याम की निशान यात्रा निकालते महामंडलेश्वर स्वामी राघवेंद्र भारती, जिला अध्यक्ष रणवीर ढाका व अन्य भक्तजन। फोटो: हरिभूमि

मां जिंदगी का विश्वास, जीवन का संबल: गीता मनीषी

हरिभूमि न्यूज रोहतक

मां जिंदगी का विश्वास होती है, मां जीवन का संबल होती है, मां जीवन का सराहा होती है, मां जीवन की आस होती है, मां जीवन का सार होती है यह कहना है गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज का। वे गोकर्ण डेरा धाम में पूर्व कुलपति एवं नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. मारकंडेय आहूजा की माता की श्रद्धांजलि सभा में अपने विचार रख रहे थे। उन्होंने कहा जिस जीव ने संसार में जन्म लिया है उसका जाना तय है यह एक अटल सत्य है लेकिन फिर भी मां की कमी को पूरा नहीं किया



जा सकता। साथ ही उन्होंने गीता के श्लोक के माध्यम से श्रद्धांजलि सभा में उपस्थितजनों को मरण जीवन व कर्म के बारे में विस्तार से बताया। श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित महामंडलेश्वर बाबा कपिल पूरी, महामंडलेश्वर बाबा कर्ण पूरी,

मां की गोद हमेशा सबसे प्यारा स्थान

श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित महामंडलेश्वर बाबा कपिल पूरी ने कहा चाहे किनकी भी उम हो जाए, मां की गोद हमेशा सबसे प्यारी जगह रहती है। मां के बिना प्यार की परिभाषा अधूरी है, उनका आशीर्वाद ही सबसे बड़ा खजाना है। अपनी मां की श्रद्धांजलि सभा में भावुक हुए डॉ. मारकंडेय आहूजा, इस्लामि एनकी बजाए आरएसएस से सीताराम व्यास ने आप हुप लोगों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस दुख की घड़ी में आप लोगों का ये सहयोग व प्यार यह परिवार कभी मुला नहीं सकता। इस दुख की घड़ी में आप लोगों ने जो परिवार को संवेदनाएं व्यक्त की है उसके लिए सब का दिल से आभारी हूँ। श्रद्धांजलि सभा में कांवेज विधायक भारत भूषण बत्ता, विधायक रघुवीर सिंह कादियल, पूर्व मंत्री मनीष गोवर, रेलपौंस एस बोसॉर्ड के एसडी राजेश जैन, उद्योगपति राजेंद्र बंसल, एलएनएस आरएसएस के कूर दराज से धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक व गैर राजनीतिक संगठनों के पदाधिकारी सहित इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के गणमान्य डॉक्टर, गुरुग्राम विश्वविद्यालय, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों सहित गणमान्य लोगों ने शिरकत की।

कुछ शब्दों तक सिमटी किशोर-युवाओं की बातचीत



कवर स्टोरी

लोकप्रिय गीतम

एक जमाना था, जब संयुक्त परिवारों में रहने वाले बच्चे किशोरावस्था में ही ऐसे मुहावरों और कहावतों दोहराने लगते थे, जो आज के किशोरों के मुंह से सुनने को मिलें तो निश्चित रूप से आश्चर्य हो- जैसे कि 'नहले पे दहला' और 'सौ सुनार की एक लुहार की'। ये कहावतें या मुहावरें अभी एक-डेढ़ दशक पहले तक किशोरों के मुंह से सुनना आश्चर्य की बात नहीं होती थी। लेकिन अगर आज की बात करें तो किशोरों के पास अंग्रेजी के कुछ गिने-चुने शब्द ही होते हैं, जिन्हें वे आपसी संवाद के दौरान अक्सर दोहराते रहते हैं। मसलन- 'ओके, रियली, यू नो, वाव और ट्रस्ट मी।' जैसे बमुश्किल एक दर्जन अंग्रेजी के शब्द हैं, जो विशेषकर आज के शहरी बच्चे अक्सर आपस में बातचीत के दौरान दोहराते रहते हैं।

मातृभाषा से बढ़ती दूरी: आज पूरे भारत में सभी क्षेत्रों की मातृभाषाओं पर यह संकट देखने को मिल रहा है। आज चाहे दक्षिण भारत हो या उत्तर, मध्य हो या पश्चिम। शहरी क्षेत्र में कहीं भी बच्चे खासकर किशोर और युवा अपनी मातृभाषा के मुहावरों, कहावतों और लोकोक्तियों के इस्तेमाल में जरा भी सहज नहीं दिखते हैं।

आजकल के किशोर और नौजवान बात-बात में 'ब्रो', 'दैट्स', 'लिट' और 'रियली यार' जैसे अंग्रेजी के शब्द तो बार-बार दोहराते हैं, लेकिन उनकी रोजमर्रा की जुबान में खांटी मातृभाषा के शब्द ढूँढ़े नहीं मिलते। वास्तव में हमारी नई पीढ़ी की वोकेबलरी किसी भाषायी विकास को नहीं बल्कि दिनों-दिन बढ़ रही सांस्कृतिक दूरी की कहानी कहती है और यह दूरी उस समय से बढ़नी शुरू हुई है, जब हम सदियों की अपनी गुलाम मानसिकता के मनोवैज्ञानिक दबाव में अपनी मातृभाषा को अंग्रेजी के सामने दरिद्र मान लेते हैं और इसी भावना के चलते अपनी रोजमर्रा की बातचीत में टूटे-फूटे अंग्रेजी के शब्द बार-बार दोहराकर अपने

को मॉडर्न दिखाने की कोशिश करते हैं।
मोबाइल की लत का असर: आजकल घरों में मां-बाप के साथ बोलनी जाने वाली मातृभाषा को किशोर और युवा आपस में बोलना ओल्ड फैशन समझते हैं। इसलिए वे हर जगह अंग्रेजी के कुछ शब्दों से काम चलाते रहते हैं। सोशल मीडिया ने विशेषकर

मोबाइल की लत लगने के बाद इस आदत को और पक्का बना दिया है। वास्तव में सोशल मीडिया का कुछ वैश्विक प्रभाव नई पीढ़ी पर इस कदर पड़ा है कि अंग्रेजी के शब्द अपनी रोजमर्रा की बातचीत में बोलना ग्लैमर लगने लगा है। जबकि हम सब जानते हैं कि ये बहुतायत में इस्तेमाल हो रहे अंग्रेजी के टूटे-फूटे शब्द अपनी अभिव्यक्ति में किसी तरह की भावना नहीं जगाते बल्कि बस स्टाइल बनकर रह गए हैं।

भावनात्मक गहराई से बढ़ी दूरी: अभी एक-डेढ़ दशक पहले तक बातचीत में इस्तेमाल होने वाली कोई एक

कहावत या कोई एक देसी मुहावरा हमारे दुखी और परेशान मन की सारी कहानी कह देता था। लेकिन आज बस 'मूड ऑफ' कह देने भर से काम चल जाता है। वास्तव में यह चेतना है कि अगर हम जल्दी चेत नहीं, तो हमारी मजबूत अभिव्यक्ति के देसी शब्द खो जाएंगे, तब हमें कहना ही नहीं, किसी के कहे हुए को समझना भी आसान नहीं होगा। आज सिर्फ कॉलेज, सोशल मीडिया में ही नहीं, दफ्तरों में भी लोगों के बीच अक्षर अंगुलियों में गिने जाने वाले कुछ शब्दों से पूरी बातचीत कर लेने की कोशिश देखी जाती है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि चाहे सोशल मीडिया हो, चाहे लोगों के बीच निजी संवाद हो या सार्वजनिक बतकही ही क्यों न हो? बस थोड़े से ही शब्द हमारे इर्द-गिर्द गूँजते रहते हैं। आजकल बातचीत में जरा भी ठहराव या भावनाओं की गहराई देखने को नहीं मिलती। 'टू द प्वाइंट'

घर, ऑफिस, कॉलेज हो या कोई पार्टी जहाँ कहीं भी किशोर या युवा आपस में बातचीत करते हैं, तो अधिकतर अंग्रेजी के कुछ शब्दों तक ही सिमटे रहते हैं। मातृभाषा संस्कार और क्षेत्रीयता का सौधापन उसमें से नदारद रहता है। नई तकनीकी का हस्तक्षेप, विदेशी जीवनशैली और आधुनिकता के अधानुकरण जैसी कई वजहें इसके लिए जिम्मेदार हैं। इससे जुड़े तमाम पहलुओं पर एक नजर।

कहकर लोग तेजी से सतहीपन को सही ठहराने की कोशिश करते रहते हैं।

एक जमाना था, जब लोग आपस में बातचीत में रुचि लेते थे, लेकिन आज तो बस 'रिप्लाई' करते हैं। वास्तव में यह फर्क भाषा के विकास का नहीं, मातृभाषा से बढ़ी हुई दूरी का परिचायक है। आज के किशोरों और हाल में जवान हुए कितने युवाओं के मुंह से आपने 'घर की मुर्गी दाल बराबर' या 'नाच न आवे आंगन टेढ़ा' जैसे मुहावरें-लोकोक्तियाँ सुनी हैं? जबकि एक-डेढ़ दशक पहले युवाओं के बीच इस तरह के मुहावरें बातचीत का हिस्सा होते थे। ये शब्द या ये मुहावरें, खालिस बातचीत नहीं होते, ये हमारे बाप-दादाओं की संस्कृति को हम तक पहुँचाने का जरिया होते हैं, जो अब लगातार खत्म हो रहे हैं। आज के युवा और किशोर अगर ये शब्द, शब्दावलि, मुहावरें तथा कहावतों से दूर हैं, तो यह दूरी यहीं तक सीमित नहीं है। इनकी यह दूरी लगातार अपनी विरासत, संस्कृति और मातृभाषा से भी हो रही है। आज की पीढ़ी 'टेकन फॉर ग्रॉटेड', 'कर्मा हिट्स बैक' या 'दैट्स हाउ इट वक्स' जैसे विदेशी वाक्य दोहराती है, जो कि निरा कोरे शब्द होते हैं। इनमें जरा भी भावनात्मक गहराई देखने को नहीं मिलती।

शॉर्टकट्स-इमोजी का बढ़ा ट्रेंड: वास्तव में मोबाइल और इंटरनेट ने संवाद को 'फास्ट फूड' में बदल दिया है। जल्दी लिखो, जल्दी भेजो, जल्दी भूलो, यही सब देखने को मिल रहा है। अब लोग 'थैंक यू' भी पूरा नहीं लिखते बल्कि 'टीएचएक्स' लिखकर काम चलाना चाहते हैं। 'क्या हाल है' की जगह अब नई पीढ़ी सिर्फ 'एसयूपी' लिखकर अपने को कूल समझती है। वास्तव में नई पीढ़ी अब इस कदर शॉर्टकट की भाषा बोल रही है कि वह अपनी आधी से ज्यादा अभिव्यक्तियों को इमोजियों के हवाले कर देती है और उनके विचार तो बस स्टैटस अपडेट तक सीमित होकर रह गए हैं। यही वजह है कि आज युवा पीढ़ी में भाषा का अभ्यास और शब्दों की संवेदना दोनों का ही घोर अभाव दिखता है।

हमारे युवाओं और किशोरों की यह नई शब्दावली, परिवार और लोक-संस्कृति के छीजने का भी परिणाम है। इसलिए हमें बहुत जल्दी सचेत हो जाना चाहिए और यह दोहरा लेना चाहिए कि भाषा का पतन शब्दों का पतन नहीं, विचारों का पतन होता है। इसलिए जितना जल्दी हो, हमें अपनी संस्कृति और सभ्यता को अगर जीवंत बनाए रखना है, तो अपनी मातृभाषा को समृद्ध बनाना होगा, सिर्फ पढ़ने के मामले में ही नहीं बल्कि रोजमर्रा के संवाद में भी। *



जीवन की सांझ में पैरेंट्स महसूस ना करें अकेलापन

दार्पित / डॉ. मोनिका शर्मा

हाल ही में दिल्ली के एक युवक की इमोशनल पोस्ट सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुई। इस पोस्ट में लिखा गया था कि वह देर रात 3:30 बजे अस्पताल के बाहर अपनी कार में बैठा है और लगभग 36 घंटे से सोया नहीं है। उसके पिता को दिल का दौरा पड़ा है। वह हालात को संभालने की कोशिश कर रहा है। उसे यह भी अफसोस है कि वह नौकरी के कारण परिवार से दूर हो गया है। अपने माता-पिता के साथ समय नहीं बिता पाया। माता-पिता को वक्त नहीं दे पाया। एक बेटा होने में असफल रहा। युवक ने पिता को हार्ट अटैक आने के बाद दुखी मन से बाद खुद को 'नाकाम बेटा' बताया। असल में बीमारी से जूझते पिता को देख लिखी गई भावुक बातों वाली यह पोस्ट कितने ही युवाओं के लिए थोड़ा ठहरकर सोचने की बात लिए हैं। ये शब्द अपनों के साथ वक्त बिताने की अहमियत समझाते हैं। समय रहते अपने माता-पिता को समय देने की एक मानवीय चेतना भी सी लिएं।

बढ़ने लगती हैं कई चिंताएं: बच्चों की जिंदगी संभालने के लिए अपना जीवन जीना भूल जाने वाले पैरेंट्स थके रहने और टूटते मन के इस दौर में उनका इंतजार करते रहते हैं। अकेलेपन के घेरे में आ जाते हैं। जाने कब क्या हो जाए का तनाव और सेप्टी से जुड़ी चिंताएं उन्हें हर पल परेशान करती हैं। सेहत से जुड़ी परेशानी में बिचकली ही टूट जाते हैं। उलझती मनःस्थिति वाली ऐसी बातों के चलते हालिया वर्षों में बुजुर्गों में सुसाइड का आंकड़ा भी बढ़ा है। मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलॉजी के वैज्ञानिकों के मुताबिक वृद्धावस्था में अकेलापन, बुजुर्गों की समय से पहले जान जाने का अहम कारण है। एक निश्चित उम्र के बाद इमोशनल और

फिजिकल रूप से अकेलेपन को झेलना इंसान के लिए तकलीफदेह होता है। उपद्राज लोगों के मामले में तो यह बहुत बड़ी समस्या बन गई है।
अपराधबोध तले दबता मन: यह सच है कि आज के समय में करियर बनाने और जरूरतें जुटाने में लगे युवाओं की मुश्किलें भी कम नहीं हैं। आज के कट थ्रॉट कॉर्पोरेटिशन में डटे रहना कुछ भी सोचने का समय नहीं देता। अपनों को भी याद करने का वक्त नहीं मिलता। इन हालातों में मन अपराधबोध का भी शिकार बनता है। नेशनल अलायंस फॉर केयर गिविंग और एएआरपी की रिपोर्ट के मुताबिक 47 प्रतिशत लोग अपने माता-पिता की चिंता में भावनात्मक रूप से टूटने लगते हैं। बड़ों के अकेले पड़ जाने की पीड़ा को बच्चों का मन भी समझता है। लेकिन काम-काजी मजदूरियों के कारण पैरेंट्स से दूर रहने वाले लोग भी जानते हैं कि उनके माता-पिता को उनकी देखभाल की जरूरत है। ऐसे में ठहराव की राह खुद ही चुननी होगी।

आपा-धापी में अपने अहसासों को बचाने के लिए युवाओं को एक संतुलन तो साधना होगा।
देर ना हो जाए: अपने बुजुर्ग पैरेंट्स से जुड़े

रहने के मोर्चे पर समय की टिक-टिक को सुनना भी जरूरी है। वक्त निकल जाने के बाद कुछ नहीं किया जा सकता। जिंदगी भर के लिए एक कसक मन में रह जाती है। देखा जाए तो यह एक रिश्ते को निभाने की बात भर नहीं। उपद्राज माता-पिता की देखभाल एक मानवीय जिम्मेदारी भी है। सो दूर बैठे केवल महंगे मोल वाली चीजें भेजकर मन को तसल्ली देने के रास्ते ना निकालें। ना भूलें, जीवन की सांझ में अपने बच्चों के इमोशनल सपोर्ट की बुजुर्ग अभिभावकों को सबसे ज्यादा जरूरत होती है। इसलिए जितना अधिक संभव हो, उनके साथ वक्त गुजारें, उनका ध्यान रखें। *



आत्मचिंतन / रहिम वैभव गर्ग

अभिव्यक्ति का सहज माध्यम है- शब्द। लेखन हो या जीवन शब्दों से ही अभिव्यक्त होता है। शब्दों की यात्रा ही, जीवन को गतिशील बनाए रखती है। शब्द न होते तो हम मौन को भी परिभाषित नहीं कर पाते। शब्दों की ध्वनि ही जीवन को गुंजायमान रखती है। शब्दों का अर्थ के साथ, लहजा भी हमारे भावों को दर्शाता है। वास्तव में अभिव्यक्ति के दो ही माध्यम हैं। एक तो शब्द, दूसरा भाव। शब्दों का संसार तो विस्तृत है ही, लेकिन शब्दों से परे भी एक दुनिया होती है, वो है मौन। मौन, वो भी व्यक्त कर देता है, जो शब्द भी व्यक्त नहीं कर पाते हैं।
अव्यक्त को करता है व्यक्त: मौन एक साधना है। इसके विविध रूप हैं। मौन कभी शब्दों का विराम है तो कभी भावों की गहन अभिव्यक्ति है। कभी मौन रोष अभिव्यक्त करता है, तो कभी आशा प्रेम की अभिव्यक्ति। मौन कभी शब्दों की विवशता भी प्रकट करता है। कभी-कभी शब्द



हमारी अनुभूति को व्यक्त ही नहीं कर पाते, उसे मौन व्यक्त कर देता है। शब्द, भावों की गूँज है तो मौन भावों की मूक अभिव्यक्ति है। किसी ने क्या खूब कहा है कि स्पीच इज सिल्वर, साइलेंस इज गोल्ड। सचमुच बोलना चांदी के समान है तो चुप रहना स्वर्ण के तुल्य। कभी ऐसा भी होता कि हम कुछ बोलना चाहते हैं, लेकिन किसी कारणवश बोल नहीं पाते हैं, फिर सोचते हैं कि न बोलना ही

अपनी बात और भावनाएं दूसरों तक पहुंचाने के लिए शब्दों की जरूरत पड़ती है। लेकिन शब्दों से भी गहन अभिव्यक्ति मौन की होती है। मौन से हमें अंतस की भी सहज अनुभूति हो जाती है।

आत्मनुभूति का द्वार मौन

श्रेयस्कर रहा।
आत्मसंयम का परिचायक: मौन, अभिव्यक्ति का श्रेष्ठतम माध्यम है। बशर्तें कोई समझने वाला हो। सामाजिक जीवन में संवादरहित अभिव्यक्ति एक गहरा प्रभाव छोड़ती है। चुप रहना भी एक विजय है। अपने शब्दों को विराम देना एक आत्मसंयम है। इस आत्मसंयम को आत्मसात करना हमारी जीत है। बाहरी मौन का संयम रखते हुए, आंतरिक मौन साधना को पाना जीवन दर्शन है। बाहरी मौन जीवन का आनंद है, आंतरिक मौन आत्मा का आनंद है। शब्दों का मौन लौकिक रंग है, आंतरिक मौन, आलौकिक रंग है। आंतरिक

चेतन का स्वभाव ही आत्मतत्व की खोज है। जिसका क्षणिक आभास हम जब-तब करते रहते हैं, लेकिन जब यह आत्मतत्व चिरस्थायी हो जाता है, तो असल आनंद प्राप्त होता है। बाहरी क्रियाएं विचलित करती हैं। आंतरिक मौन, लोक में रहकर आलौकिक सुख प्रदान करता है। स्वयं से स्वयं को ढूँढ़ना ही आंतरिक मौन है। वहीं ईश्वर से साक्षात्कार है। आत्मा में ही परमात्मा का वास होता है। आंतरिक मौन सृष्टि का अनहद नाद है, जिसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है।

संसार में रहकर संसार से विरक्ति सबसे कठिन कार्य है। आसक्तियों ही सांसारिक कार्यों को फलीभूत करवाती हैं। जीवन का द्वैत ही यही है कि यदि अध्यात्म को अपनाते हैं तो कर्तव्यों से विमुख हो जाते हैं और कर्तव्यों का निर्वाह, बिना आसक्तियों के होता ही नहीं। इसी झंझावात में जीवन-यापन हो जाता है।

वास्तविकता यही है कि हम दो दुनिया में जीते हैं। बाहरी दुनिया जो कर्मशील दुनिया है, जहाँ हम अपना किरदार निभाने के लिए बाध्य हैं। वो हमें थोड़ी आसक्ति भी देती है। आसक्त होना लाजिमी भी है, क्योंकि वही हमें कर्मशील बनाता है। दूसरी दुनिया है आत्मा का आनंद, जिसे हम स्वयं के भीतर अनुभव कर सकते हैं। ये हमारी अपनी खोज है, अपनी पूंजी है। इसे हम ही प्राप्त कर सकते हैं और इसे कोई हमसे छीन भी नहीं सकता। बाहरी क्रियाकलापों

का विराम ही आंतरिक मौन है। बाहर कितना ही शोर हो यदि आंतरिक शांति है तो आप हर जगह विजयी होंगे। कहने का सार यही है कि अपने जीवन की सांसारिक यात्रा के विभिन्न पड़ावों को पूरा करते हुए भी अंतिम ध्येय अंतस का मौन ही होना चाहिए। *

छोटी कहानी / सविता गोयल

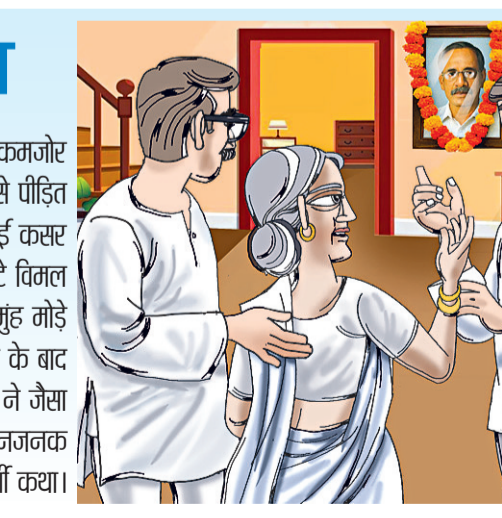
यह क्या भैया! ना आपने सारे नाते-रिश्तेदारों को न्यौता दिया और ना ही भोज का आयोजन सही तरीके से किया। समाज में क्या इज्जत रह जाएगी हमारी! अरे पैसे कम पड़ रहे थे तो एक बार बोल दिया होता हमसे। मैं ही कुछ इंतजाम कर देता। पापा की तेरहवीं पर मेरे ससुरजी भी आने वाले हैं। वो क्या सोचेंगे, उनके दामाद ने अपने पिता की तेरहवीं भी हंग से नहीं की। आप सबको तो पता ही है, वो कितने बड़े आदमी हैं। मेरी क्या इज्जत रह जाएगी उनके सामने? कमल का छोटा भाई विमल अपनी ही रौब में बोलता जा रहा था।

मनोहरजी को गुजरे आज ग्यारह दिन हो गए थे। पिछले दो साल से वह बहुत पीड़ा में थे। कैसर की बीमारी में एक-एक दिन सालों की तरह गुजर रहे थे। उनका बड़ा बेटा कमल और बहू मीना ने अपने पिता की सेवा और इलाज में अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी। किराने की दुकान में कोई ज्यादा कमाई नहीं थी, लेकिन जितना बन पड़ा, उसमें उन्होंने कभी अपना हाथ पीछे नहीं खींचा। कमल अपने माता-पिता के साथ ही रहता था। छोटा बेटा विमल जब से पढ़-लिखकर भी इंजीनियर बनकर शहर में बसा, कभी पलट कर वह घर नहीं आया। नौकरी अच्छी थी तो बड़े घर की लड़की का रिश्ता भी आ गया था। अब तो विमल के और भी पंख लहर गए थे।

तृप्ति

जहाँ आर्थिक रूप से कमजोर बड़े बेटे कमल ने कैसर से पीड़ित पिता के इलाज में कोई कसर नहीं छोड़ी, वहीं छोटे बेटे विमल ने अपनी जिम्मेदारी से मुँह मोड़े रखा। पिता के देहांत के बाद उनकी तेरहवीं में विमल ने जैसा दिखावा चाहा, वह अपमानजनक था। एक मर्मस्पर्शी कथा।

पिता की बीमारी का पता होने के बाद भी कभी उसने उनके इलाज और देखभाल में बड़े भाई का हाथ नहीं बंटया। एक बार कांता देवी ने विमल से कहा भी, 'बेटा, कमल का हाथ थोड़ा तंग रहता है, ऊपर से तेरे पिताजी की बीमारी पर बहुत पैसा खर्च हो रहा है। तुम थोड़ी मदद कर दोगे तो उसे थोड़ी राहत मिलेगी।' इस पर विमल का जवाब था, 'मां, आपको क्या पता, मेरी कमाई से ज्यादा तो मेरा खर्च है। आप लोग तो यहाँ पुरतैनी मकान में रहते हैं। लेकिन मुझे तो हर महीने फ्लैट का किराया भी देना पड़ता है। आगे मेरा परिवार भी बढ़ रहा है तो खर्च भी बढ़ रहे हैं फिर इस बीमारी का क्या पता ठीक हो ना हो! बेकार में लुटने-पिटने से क्या फायदा?'



बेटे के मुँह से ऐसा सुनकर कांताजी ने कभी दोबारा उसे किसी प्रकार की मदद के लिए नहीं कहा। मनोहरजी बच तो नहीं पाए, लेकिन अपने बड़े बेटे-बहू के सेवाभाव को देखकर उनके हृदय में हमेशा उनके लिए आशीर्वाद के भाव रहते। कांता देवी पति की मृत्यु से आहत थीं, ऊपर से आज मनोहरजी की तेरहवीं पर आए विमल के मुँह से ये सब सुनकर उन्हें बहुत बुरा लग रहा था। अपने बड़े बेटे को असमंजस में देख उन्होंने समझाया, 'कमल, तुझे किसी की बातों में आकर अपनी हैसियत से बाहर कुछ करने की जरूरत नहीं है। तूने अपने पिता के जीते जी उनकी जो जी-जान से सेवा की है, वो उसी से तृप्त हो गए हैं। ये ऊपरी दिखावा और कर्मकांड उनके लिए अब कोई मायने नहीं

रखता। तू जितना कर रहा है, वह बहुत है। तेरे पिताजी की आत्मा तो तेरी सेवा से ही तृप्त हो गई है बेटा। बस पांच ब्राह्मणों को भोजन करा दे और अपने पिता का तर्पण कर दे। फिर कांता देवी अपने छोटे बेटे विमल के मुखातिब होते हुए बोलीं, 'आज तुझे यहाँ सारे कामों में जो कमी नजर आ रही है, वह उस समय क्यों नजर नहीं आई, जब तेरे पिताजी बीमारी से तड़प रहे थे और तेरा यह भाई तंगी से जूझते हुए भी रोज उन्हें लेकर अस्पताल के चक्कर लगा रहा था। उसे अपने दिन का चैन और रातों की नींद की भी परवाह नहीं थी। उस समय तो तेरे मुँह से एक बार भी नहीं निकला कि भैया, पिताजी के इलाज में मैं कुछ मदद कर दूँ। उस वक्त तुझे यहाँ अपने पास रख, पता नहीं कब तुझे इनकी जरूरत पड़ जाए। मां हूँ, इसलिए कभी अपने दिल और जुबान से तैरा बुरा नहीं सोचूंगी, लेकिन बेटा जब तेरे बच्चे अपनी जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ेंगे तब तुझे अपने मां-बाप का दर्द समझ में आएगा।'

यह सुनकर विमल का सिर झुक गया। उसे अपनी माँ और भाई से नजरें मिलाने की हिम्मत भी नहीं हो रही थी। कमल ने अपने सामर्थ्य अनुसार अपने पिता का तर्पण और भोज कराया। कांता देवी के चेहरे पर आज संतुष्टि के भाव थे। उन्हें विश्वास था कि उनके पति तृप्त होकर इस दुनिया से विदा हुए हैं। *

दोहे / चमंडीलाल अग्रवाल

सूनी-सी दहलीज
सूना घर का आंगना, सूनी-सी दहलीज।
भूख, गरीबी वो चुकी, घर गरीब के बीज।।
जैसे को तैसा मिले, खे ल्गलावर परत।
वह भी फिर आरवस्त-सा, रम भी फिर आरवस्त।।
बदल रही है जिंदगी, बदल रहा है दौर।
निःसंदिग्ध नई चुनौतियाँ, हर पल करिए गौर।।
पाँव कुल्लाई गार ली, गण संभलना भूल।
गद्दा आया सागने, काहे गिरे किजुल।।
गीता, रामायण बीडी, बांधे देव, कुरान।
खे न सका इंसान तो, एक अद्रद इंसान।।
भरी भीड़ में रम हुए, बहुत अक्रेले आज।
अपनेपन का बांधते, किसके सिर पर ताज।
यदि कुपाय को धन दिया, धन लैगा बेकार।
ज्यादा खाकर वस्तुएं, जैसे तब बीमार।।
वाटर एटीएम लें, सूखे सारे कूप।
परिवर्तन का लोहरा, खड़ा बदलकर रूप।।
फिसला करती लथ से, पाई कोई चीज।
खोते हैं संसार में, ऐसे कुछ नाबीज।।
मले धिवेकानंद लें, अथवा गौतम बुद्ध।
कर्तव्यों से ही लड़ें, अधिकारों के युद्ध।।

पुस्तक रचा / विज्ञान भूषण

देश की स्वर्णाभा नरेंद्र मोदी

आजादी के बाद देश के विकास और इसे सशक्त बनाने में भारत के सभी प्रधानमंत्रियों की भूमिका रही है। इसी क्रम में वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अब तक के अपने कार्यकाल में कई महत्वपूर्ण और अभूतपूर्व कार्य किए हैं और इस दिशा में निरंतर प्रयासरत भी हैं। फिर वो चाहे विश्व में भारतवर्ष की प्रतिष्ठा बढ़ाने की बात हो, कश्मीर से धारा 370 हटाने का ऐतिहासिक कदम हो, कोरोना काल का मजबूती से सामना करना रहा हो, महिलाओं और गरीबों के सशक्तिकरण के लिए किए गए प्रयास हों या आतंकी गतिविधियों का मुंहतोड़ जवाब देना हो। इस पुस्तक में उनके ऐसे तमाम प्रयासों की विस्तार से चर्चा की गई है। इसमें लेखक ने नरेंद्र मोदी के व्यक्तित्व के कई पहलुओं को भी उजागर किया है। *



पुस्तक: भारतवर्ष की स्वर्णाभा नरेंद्र मोदी, **लेखक:** प्रोफेसर (डॉक्टर) रमेश चंद्र तोमर, **मूल्य:** 600 रुपये, **प्रकाशक:** प्रभात प्रकाशन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली



इंडियन पैसिफिक एक्सप्रेस

जैसा कि नाम से ही जाहिर है, यह ट्रेन आपको दुनिया की सबसे यादगार ट्रेन यात्रा के रूप में दो महासागरों को पार करवाती है। सिडनी से पर्थ तक का 4352 किमी. लंबा यह रेल मार्ग आपको अनूठे लोक की यात्रा का अनुभव देता है। विशाल ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप को पार करते हुए आप यहां के दिलकश नजारे देखेंगे तो मानो हिप्पोटाइज हो जाएंगे। कई जगह तो आपको वन्य जीवन की झांकी भी देखने को मिलेगी। इस ट्रेन में यात्रियों के लिए कई क्लास के कोच हैं, जैसे गोल्ड सर्विस के तहत स्लीपर केबिन। आर रेड सर्विस के तहत डे नाइट सीट। स्लीपर केबिन में आप तमाम सुविधाओं से सुसज्जित सिंगल या ट्विन स्लीपर केबिन ले सकते हैं और स्वाइट ऑस्ट्रेलियन भोजन का लुत्फ उठा सकते हैं। जबकि आर रेड सर्विस के तहत डेनाइट सीट दी जाएगी, जिस पर सोने की सुविधा भले ही न हो पर आपको आरामदायक तरीके से बैठने की सुविधा जरूर मिलती है। यहां पर्याप्त लेगस्पेस है, कोहनी टिकाने के लिए आरामदायक हथिये हैं, वीडियो देखने की सुविधा है। इन डिब्बों में भी स्नेक्स, कॉफी, लंच, डिनर सब कुछ उपलब्ध कराया जाता है। k

रोचक

शिल्कर चंद जैन

रेल यात्राएं तो आपने भी जरूर की होंगी। लेकिन देश-दुनिया में कुछ रेलगाड़ियां ऐसी हैं, जो हजारों किलोमीटर की यात्रा करती हैं। दुनिया की सबसे लंबी दूरियां तय करने वाली इन रेलगाड़ियों से यात्रा का अनुभव बेहद अनोखा और मजेदार होता है। इनमें से कुछ लंबी रेल यात्राओं पर एक नजर।

सबसे लंबी दूरी तय करने वाली अनोखी-शानदार रेल गाड़ियां

ट्रांस साइबेरियन एक्सप्रेस

दुनिया की सबसे लंबी दूरी तय करने वाली यात्री ट्रेन है, ट्रांस साइबेरियन एक्सप्रेस। मॉस्को से व्लाडीवोस्टोक तक फैली 9288 किमी. की पटरियों पर सपरत दौड़ती यह ट्रेन आपको वाकई एक यादगार यात्रा का अनुभव देती है। 77 किमी. प्रतिघंटे की रफ्तार से दौड़ने वाली इस ट्रेन में बिताए करीब 146 घंटे (करीब 6 दिन) आप शायद ही अपनी जिंदगी में कभी भुला पाएं, क्योंकि इन 6 दिनों में आप कभी पहाड़ों के बीच से गुजरेंगे, तो कभी हरी घास से भरे मैदानों से, कभी यह ट्रेन आपको रेगिस्तान के दृश्य दिखाएगी, तो कभी हरे भरे विषाजल जंगल के बीच से ले जाएगी। k



भारत की सबसे लंबी रेल यात्रा

भारत की सबसे लंबी रेल यात्रा विवेक एक्सप्रेस तय करती है। यह 9 राज्यों से होकर गुजरती है। यह असम के डिब्रूगढ़ से तमिलनाडु के प्रसिद्ध स्थल कन्याकुमारी तक चलती है। यह रेलमार्ग लगभग 4,273 किलोमीटर लंबा है। इस सफर को तय करने में लगभग 80 घंटे लगते हैं। इस ट्रेन का नाम स्वामी विवेकानंद के नाम पर रखा गया है। अपने इस सफर में यह ट्रेन लगभग 55 स्टेशनों पर रुकती है। k

द ब्लू ट्रेन

दक्षिण अफ्रीका की मशहूर ब्लू ट्रेन प्रीटोरिया से केपटाउन के बीच 1600 किमी. की यात्रा तय करती है। सच कहें, तो यह ट्रेन पटरि पर दौड़ने वाले किसी होटल की मानिंद है। इसमें कई सुट्स भी हैं, जहां होटल जैसी सुविधाएं मौजूद हैं। यात्रा बहुत लंबी नहीं है। करीब 27 घंटे की इस यात्रा के दौरान अफ्रीका के तस्वीर सरीखे कुदरती दृश्य आपका मन मोह लेंगे। इस ट्रेन की गति कोई खास नहीं, मात्र 57 किमी. प्रति घंटे है, क्योंकि इसे होटल रूम सरीखे डिब्बों की जरा नजाकत से ही चलाना पड़ता है और यात्रियों की सुख-सुविधा का खयाल भी रखना पड़ता है। k



द कनाडियन ट्रेन

टोरंटो से वैंकुवर की यात्रा करवाने वाली यह ट्रेन जर्नी आपको 83 घंटे तक सैर कराती है। इस दौरान यह ट्रेन आपको कनाडा के विभिन्न मनोहर दृश्यों से भरी 4466 किमी. दूरी का अवलोकन करवाती है। ट्रेन की गति पहाड़ों की चढ़ाई में कभी मंद पड़ जाती है, तो हरे-भरे चित्ताकर्षक जंगलों से गुजरने के दौरान तेज भी हो जाती है। इस ट्रेन में कांच से बनी बड़ी-बड़ी खिड़कियों से तरह-तरह के दृश्यों को देखना वाकई रिलैक्सिंग और पीसफुल एक्सपीरियंस देता है। k

चाइना यूरोप ब्लॉक ट्रेन

द चाइना यूरोप ब्लॉक ट्रेन, दुनिया की सबसे लंबी दूरी तय करने वाली ट्रेन है। यह यीबू से मैड्रिड तक की 9977 किमी. की यात्रा करीब 21 दिनों में तय करती है। लेकिन यह कोई यात्री ट्रेन नहीं बल्कि मालगाड़ी है। k



झिंगू हाइ स्पीड रेल

आज की तारीख में अगर लंबी दूरी तय करने वाली सबसे तीव्र गति वाली यात्री रेलगाड़ी का चिह्न होता है, तो उनमें झिंगू हाइ स्पीड रेल सबसे ऊपर है। यह ट्रेन बीजिंग से शंघाई की 1303 किमी. की यात्रा मात्र 5 घंटे में तय कर लेती है। इसकी गति 300 किमी. प्रतिघंटे तक हो सकती है। k



शर्ट-जैकेट्स, शर्ट और जैकेट का कॉम्बो होता है। इन दोनों की खूबियां मिलकर शर्ट-जैकेट्स बनाती हैं। इस सीजन में इनका ट्रेंड यंगस्टर्स में काफी बढ़ रहा है।

इन हल्की सर्दियों में युवाओं को भा रहें शर्ट-जैकेट्स

फैशन ट्रेंड

प्रतिभा अरोड़ा

शर्ट-जैकेट्स या जिसे फैशन की भाषा में शैकेट्स भी कहा जाता है, इस साल की हल्की सर्दियों में युवाओं की पहली पसंद बनी हुई है। ना सिर्फ स्टाइल के कारण बल्कि इनके आरामदायक, वर्सटिलिटी और मॉडर्न लुक की वजह से भी ऐसा हुआ है। क्या होती है शर्ट-जैकेट: शर्ट-जैकेट्स, दिखती तो शर्ट जैसी हैं, लेकिन इनका फेब्रिक मोटा होता है और ये हल्की सर्दियों में गार्मेट देकर जैकेट का भी काम करती हैं। इसलिए इन्हें शर्ट-जैकेट्स कहा जाता है। इन्हें पहनने के लिए जरूरी नहीं है कि मौसम बहुत ठंडा ही हो। अगर हल्की हवा चल रही हो तो भी इन्हें आराम से पहना जा सकता है।



इनकी खासियतें: शर्ट-जैकेट्स ट्विल, डेनिम, वूलेन फ्लैनेल, कॉटन ब्लेंड या कॉर्डराय से बनती हैं। इनकी डिजाइन बेहद आकर्षक होती है, जिनमें आगे बटन, दो या चार पॉकेट और किसी भी खड़ी तो कई में गिरी कॉलर होती हैं यानी दिखने में ये बिल्कुल शर्ट जैसी लगती हैं, लेकिन शर्ट के मुकाबले थोड़ी मोटी होती हैं। हालांकि इनका वजन कड़ाके की सर्दियों में पहनी जाने वाली जैकेट्स के मुकाबले काफी कम होता है। फिर भी ये शर्ट के मुकाबले वजनदार होती हैं। ट्रांजिशन वेडर यानी जब न तो ज्यादा सर्दी होती है और न ज्यादा गर्मी, कहने का मतलब पूरी तरह से बारिश के बाद की गर्माहट का मौसम गया नहीं होता और पूरी तरह से सर्दियां आई नहीं होतीं, इस दौरान इन्हें पहनना सबसे सही लगता है। क्योंकि ऐसे मौसम में जब हल्की ठंड पड़ रही हो, ये बिल्कुल परफेक्ट च्वाइस होती हैं। इन्हें अंदर टी-शर्ट के रूप में भी पहना जा सकता है। कई बार खुले या बंद दोनों तरीकों से इन शर्ट-जैकेट्स को केरी किया जा सकता है। युवाओं को क्यों हैं इतनी पसंद: शर्ट-जैकेट्स युवाओं को बेहद पसंद आती हैं। वास्तव में इन दिनों कपड़ों में लेयरिंग ट्रेंड में है यानी, कई परतों में ड्रेस पहनकर अलग-अलग लुक बनाना। शर्ट-जैकेट्स इस लेयरिंग फिगोमिना की स्टार आइटम है। इसे आराम और स्टाइल के साझे कॉम्बिनेशन के रूप में भी देखा और जाना जाता है। यह न तो पूरी तरह से फॉर्मल है और न ही पूरी तरह से कैजुअल बल्कि इसके

लिए जो शब्द ज्यादा प्रचलित है, वह है-स्मार्ट कैजुअल। इसलिए ये युवाओं को विशेष रूप से पसंद आती हैं, क्योंकि उनकी बांडी में ये एक परफेक्ट बैलेंस बनाती हैं। लेकिन इसकी पॉपुलैरिटी की वजह सिर्फ यही नहीं है, इसे पॉपुलर बनाने में सोशल मीडिया का भी बड़ा हाथ है। वास्तव में इंस्टाग्राम, पिंटेस्ट और यूट्यूब पर फैशन इंफ्लुएंसर लगातार इन्हें प्रमोट कर रहे हैं, जिससे युवाओं में इनकी डिमांड काफी बढ़ गई है। सबसे बड़ी बात यह है कि ये शर्ट-जैकेट्स, युवक ही नहीं युवतियों के बीच भी खूब लोकप्रिय हैं, क्योंकि इन्हें दोनों ही बड़े आराम से पहन सकते हैं। ये दोनों की बांडी पर खूब फवती हैं। शर्ट-जैकेट्स पहनने का एक फायदा यह भी है कि इसके कारण बहुत कम कपड़ों पर भी एक कंप्लीट आउटफिट तैयार हो जाता है। बस एक बेसिक टी-शर्ट, डेनिम और ये शर्ट-जैकेट्स, बस समझिए पूरा आउटफिट तैयार हो गया।

इस साल है इसका ट्रेंड: इन दिनों यह फैशन या ट्रेंडिंग स्टाइल में इसलिए है, क्योंकि इस साल पुरुषों द्वारा डेनिम और फ्लैनेल चेक शर्ट-जैकेट्स को खासतौर पर पसंद किया जा रहा है। अपने नए लुक, स्मार्ट डिजाइन और कलर कॉम्बिनेशन के कारण ये यंगस्टर्स की पहली पसंद बनी हुई है तो लड़कियों में भी कुछ खास कलर्स की शर्ट-जैकेट्स इस साल खूब फैशन में हैं, जिनमें परपल टोन कलर सबसे खास है। साथ ही लड़कियों में इनका ओवरसाइज्ड डिजाइन भी खूब हिट है। चूंकि यह एक यूनिसेक्स फैशन है, इसलिए शर्ट-जैकेट्स को खूब सारे न्यूट्रल कलर्स में भी देखा जाता है जैसे- बेज, ऑलिव, ब्लैक पिक और ग्रे।

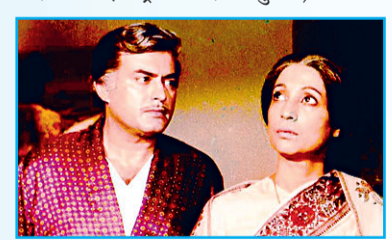
कुल मिलाकर शर्ट-जैकेट्स इन दिनों युवाओं के बीच इसलिए भी खूब फैशन में हैं, क्योंकि ये सिर्फ एक ड्रेस भर नहीं हैं बल्कि लाइफस्टाइल का सिंबल बन गए हैं। कम लेयरिंग, ज्यादा स्टाइल और हर मौके पर फिट रहने वाली शर्ट-जैकेट्स आज यंगस्टर्स के बीच पहली पसंद बनी हुई हैं। जहां तक इसके स्टाइल कॉम्बिनेशन की बात है तो शर्ट-जैकेट्स में स्टाइलिश लुक के लिए इसे बेसिक टी-शर्ट या टर्टलनेक के ऊपर पहनते हैं। साथ ही लोअर में डेनिम, चिनी या स्कर्ट पर भी यह बहुत आसानी से मैच कर जाती है। स्कार्फ या कैप के साथ भी इसे केरी करना अटपटा नहीं बल्कि आकर्षक लगता है। जहां तक फुटवियर्स की बात है तो स्नीकर्स या लोफर इसके साथ अच्छे लगते हैं। k

जिस दौर में कई सुपर स्टार्स बॉलीवुड में एक्टिव थे, उस समय में भी संजीव कुमार ने अपने एक्टिंग टैलेंट से अलग पहचान बनाई। संजीव कुमार की पुण्य तिथि 6 नवंबर पर उनके द्वारा निभाए कुछ यादगार किरदारों पर एक नजर।

हर रोल निभाने में परफेक्ट वर्सटाइल एक्टर संजीव कुमार

यादें
मनोज प्रकाश

सुपर स्टार का ग्लैमर, हिट कराने का तमगा और स्लिम-ट्रिम फिगर अगर किसी हीरो की इमेज को एक डेकोरम देता है, तो किसी भी भूमिका को परफेक्ट तरीके से करना भी किसी फिल्म को हिट कराने की गारंटी हो सकती है। यह बात सिद्ध की थी संजीव कुमार ने। वह एक ऐसे कलाकार थे, जिनके बारे में कहा जाता था कि वे कोई रोल निभाते नहीं, उसे पूरी तरह जीते थे। जिस तरह हिंदी फिल्म इंडस्ट्रीज में दिलीप कुमार, अमिताभ



'आंधी' में सुवित्रा सेन के साथ संजीव कुमार

बचन, धर्मेन्द्र, राजेश खन्ना, देवानंद, राजकपूर को बेहतरीन अभिनेता माना जाता है, उसी श्रेणी में संजीव कुमार का नाम भी बड़े सम्मान से लिया जाता है। हर तरह की भूमिकाएं निभाई: 9 जुलाई 1938 को गुजरात प्रांत में जन्मे, संजीव कुमार ने जितनी भी फिल्मों की सभी में उनके डावलोंग से अधिक उनकी आंखें और मुस्कराहट ने अभिनय किया। संजीव कुमार हिंदी फिल्मों के ऐसे अभिनेता थे, जिन्होंने हर तरह की भूमिकाएं कीं। यहां तक कि उन्होंने एक ही फिल्म में एक साथ नौ भूमिकाएं निभाकर एक ऐसा कमाल किया, जो 'भूतो न भविष्यति' है। उनके किरदार ऐसे हुआ करते थे, जिन्हें भुला पाना संभव ही नहीं है। 'शोले' और 'आंधी' उनकी दो ऐसी फिल्में हैं, जो भारतीय सिनेमा में मील का पत्थर माना जाता है। 'शोले' में ठाकुर का यादगार किरदार: 'शोले' में संजीव कुमार ने पहले जेलर और फिर ठाकुर बलदेव सिंह का रोल बखूबी निभाया। पूरे परिवार को डकैत गब्बर सिंह द्वारा खत्म कर दिए जाने और उनके दोनों हाथ काट दिए जाने के बाद भी ठाकुर बलदेव सिंह ने जिस तरह से अपना

प्रतिशोध लिया, उसने आने वाली फिल्मों के लिए एक मानक बना दिया।

हर किरदार में अलग रंग: फिल्म 'आंधी' में संजीव कुमार के द्वारा निभाए गए होटल मैनेजर जेके का रोल आज भी दर्शक याद करते हैं। उस फिल्म में उन्होंने एक बेबस पति लॉकन समर्पित प्रेमी के रोल में अभिनय की पराकाष्ठा को छुआ था। जहां तक उनके अभिनय में मौजूद वर्सटिलिटी की बात है तो 'खिलौना' में बिजय, 'अनामिका' में देवेंद्र, 'सच्चाई' में किशोर, 'बचपन' में काशीराम, 'नमकीन' में गेरुलाल, 'राजा और रंक' में विजय और सुधीर, 'कोशिश' में हरिचरण, 'अंगूर' में अशोक और 'वक्त की दीवार' में विक्रम के किरदार ऐसे हैं, जिनसे उनकी प्रतिभा का लोहा सभी ने माना। 'उलझन' में उन्होंने सुलक्षणा पंडित के साथ एक इमानदार

अफसर और पति के रूप में फंसे व्यक्ति के द्रढ़ को बेहतरीन तरीके से निभाया। फिल्म 'नया दिन नई रात' में नौ किरदार निभाना और सभी को उसकी धारा में बहाते ले जाना, संजीव कुमार के बस की ही बात थी। उनसे पहले और उनके बाद आज तक किसी ने नौ रोल नहीं निभाए हैं। ये भी रहे यादगार किरदार: संजीव कुमार को फिल्म 'दस्तक' के लिए हार्मिद का गंभीर किरदार निभाने हेतु राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया था। इसके उलट 'पति, पत्नी और वो' में तो उन्होंने हंसा-हंसाकर लोगों को लोटपोट कर दिया था। पत्नी की बीमारी की आड़ में सेकेट्री से प्रेम राग आलापना और पत्नी को समझाना, उस दौर में एक ऐसी कहावत बन गया था कि लोग रियल लाइफ में ऐसे किसी मामले में आपस में एक-

दूसरे को कह देते थे-संजीव कुमार बन रहे हो? संजीव कुमार के द्वारा निभाए गए यादगार किरदारों में 'मौसम' के डॉक्टर अमरनाथ को कैसे भूला जा सकता है? इस फिल्म में उनका डबल रोल, शर्मिला टैगोर के रोल से किसी तरह से कमतर नहीं रहा। इसी तरह फिल्म 'त्रिशूल' तो अमिताभ की कही जाती है, लेकिन इसमें संजीव कुमार ने एक ऐसे व्यापारी का रोल प्ले किया, जो अंजाने में ही अपने बेटे से व्यापारिक संघर्ष कर रहा होता है और उसे पता ही नहीं चलता। इसमें पिता-पुत्र के संवाद, दो प्रतिद्वंद्वी व्यापारियों की उस लड़ाई का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमें वे अपनी जीत के लिए किसी भी स्तर तक जा सकते हैं। उन पर फिल्माए गाने भी हुए हिट: संजीव कुमार पर फिल्माए गाने भी सुपरहिट रहे। 'अनोखी रात' का गीत 'ओह रे ताल मिले नदी के जल में, नदी मिले सागर में', 'खिलौना' का 'खिलौना जानकर तुम तो', 'सीता और गीता' का 'हवा के साथ-साथ, 'अनामिका' का 'मेरी भीगी भीगी सी पलकों पे', 'आंधी' का 'तुम आ गए हो, नूर आ गया है', 'मौसम' का 'दिल दूढ़ता है फिर वहीं फुसंत के रात-दिन' और 'सिलसिला' का 'रंग बरसे', हर दौर के हिट गानों की श्रेणी में गिने जाते हैं।

अधूरी रही प्रेम की दास्तान: संजीव कुमार ने जिस तरह से फिल्मों में अपना परचम लहराया, उसी तरह से उनके प्रेम के चर्चे भी खूब सुने जाते रहे। हेमा मालिनी के साथ के किस्से तो सर्वाधिक चर्चित रहे ही हैं। सुलक्षणा पंडित के साथ भी उनकी जोड़ी चर्चित रही पर वह भी अपने मुकाम पर पहुंचने से रह गईं। खुद के बारे में भी कई अपनी ही भविष्यवाणी को सच साबित करते हुए जीवन के पचास बसंत पूर्ण करने से पहले ही 6 नवंबर 1985 को अनंत आकाश में हमेशा-हमेशा के लिए विलीन हो गए। k

अमल करने से ही बनेगी बात

स्मार्टफोन के स्क्रीन से हर पल प्रेरणादायक विचारों की बौछार होती रहती है। लोग इसमें रुचि भी खूब लेते हैं। लेकिन अगर आप स्वयं में सकारात्मक बदलाव देखना चाहते हैं तो सिर्फ मोटिवेशनल कंटेंट देखना नहीं, उस पर अमल भी करना होगा।



आचरण और जीवनशैली से शिष्यों के जीवन को दिशा और प्रेरणा देते हैं। स्पष्ट है कि इसी के चलते सिद्ध पुरुषों के विचार ही जीवन में फलित होते हैं। सोशल मीडिया पर तैरते मोटिवेशनल आख्यानों में प्रेरणा देने की बातें भर हैं। इन बातों को कहने-समझाने वालों का अपना जीवन लोगों को प्रभावित करने वाला नहीं है। इतना ही नहीं शेर कर आगे बढ़ाने की तकनीकी सहूलियत से हर कोई यह ज्ञान किसी दूसरे व्यक्ति तक तो पहुंचा रहा है पर अपने कर्मों में नहीं उतार रहा। बहुत से इंफ्लुएंसर तो प्रेरणादायी शब्दों को अपनी मार्केटिंग माध्यम बना चुके हैं। वहीं आत्म-विकास हो या आंतरिक शांति गुरुओं का जीवन ही सहज ढंग से व्यक्ति को नैतिक मार्गदर्शन देता है। जीवन को संवारने की सच्ची शिक्षा ही नहीं मिलती, उन उपदेशों से मन को साधने में भी मदद मिलती है।

मोटिवेशनल वीडियो देखने की वजह: जिंदगी में मौजूद किसी भी समस्या से पार पाने, अपने लक्ष्य तक जाने या मन को शांत सहज रखने के लिए मोटिवेशनल वीडियो खूब देखे जा रहे हैं। जबकि असल जीवन में प्रेरणादायी बातों से मन-स्थिति बदलने की प्रतिबद्धता नहीं दिखती। बावजूद इसके सोशल मीडिया प्रेरक सामग्री से अटा पड़ा है। असल में इसके पीछे आनंद के सिद्धांत और डोपामाइन हार्मोन को बढ़ाने की प्रणाली एक अहम कारण है। ऐसा कंटेंट देखने से व्यक्ति को त्वरित संतुष्टि और एक भावनात्मक सहारा मिलता है। अमल करना सबसे जरूरी: निःसंदेह, जीवन से जुड़ी चुनौतियों का सामना करने और लक्ष्यों को पाने के लिए आगे बढ़ने हेतु सही कार्य योजना जरूरी है। वचुंअल स्क्रीन में झांकेते रहने के बजाय वास्तविक जीवन में नियमित समय और ऊर्जा लगाकर ही अपने आप में बदलाव लाया जा सकता है। आध्यात्मिक उन्नति की जा सकती है। व्यक्तिगत जीवन के हर पक्ष पर संवर्धन किया जा सकता है। k



दूसरे को कह देते थे-संजीव कुमार बन रहे हो? संजीव कुमार के द्वारा निभाए गए यादगार किरदारों में 'मौसम' के डॉक्टर अमरनाथ को कैसे भूला जा सकता है? इस फिल्म में उनका डबल रोल, शर्मिला टैगोर के रोल से किसी तरह से कमतर नहीं रहा। इसी तरह फिल्म 'त्रिशूल' तो अमिताभ की कही जाती है, लेकिन इसमें संजीव कुमार ने एक ऐसे व्यापारी का रोल प्ले किया, जो अंजाने में ही अपने बेटे से व्यापारिक संघर्ष कर रहा होता है और उसे पता ही नहीं चलता। इसमें पिता-पुत्र के संवाद, दो प्रतिद्वंद्वी व्यापारियों की उस लड़ाई का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमें वे अपनी जीत के लिए किसी भी स्तर तक जा सकते हैं। उन पर फिल्माए गाने भी हुए हिट: संजीव कुमार पर फिल्माए गाने भी सुपरहिट रहे। 'अनोखी रात' का गीत 'ओह रे ताल मिले नदी के जल में, नदी मिले सागर में', 'खिलौना' का 'खिलौना जानकर तुम तो', 'सीता और गीता' का 'हवा के साथ-साथ, 'अनामिका' का 'मेरी भीगी भीगी सी पलकों पे', 'आंधी' का 'तुम आ गए हो, नूर आ गया है', 'मौसम' का 'दिल दूढ़ता है फिर वहीं फुसंत के रात-दिन' और 'सिलसिला' का 'रंग बरसे', हर दौर के हिट गानों की श्रेणी में गिने जाते हैं। अधूरी रही प्रेम की दास्तान: संजीव कुमार ने जिस तरह से फिल्मों में अपना परचम लहराया, उसी तरह से उनके प्रेम के चर्चे भी खूब सुने जाते रहे। हेमा मालिनी के साथ के किस्से तो सर्वाधिक चर्चित रहे ही हैं। सुलक्षणा पंडित के साथ भी उनकी जोड़ी चर्चित रही पर वह भी अपने मुकाम पर पहुंचने से रह गईं। खुद के बारे में भी कई अपनी ही भविष्यवाणी को सच साबित करते हुए जीवन के पचास बसंत पूर्ण करने से पहले ही 6 नवंबर 1985 को अनंत आकाश में हमेशा-हमेशा के लिए विलीन हो गए। k



'त्रिशूल' में अमिताभ के पिता के किरदार में संजीव कुमार